दैव-विचार-माला — कृ. का. ह्वे
रवि-विचार
Δ:864
152J7K
CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

# रवि-विचार


लेखक

ज्योतिषी स्व. ह. ने. काटवे

अनुवादक

प्रा. विद्याधर जोहरापुरकर,

एम्. ए., नागपुर २


प्रथमावृत्ति १९५७

# अनुक्रमणिका



प्रकरण विषय पृष्ठ

निवेदन

१ विषय-प्रवेश १

२ रवि का उच्च नीचत्व ४

३ रवि का कारकत्व ९

४ रवि के विषय में अधिक विवरण १४

५ रवि का मूल स्वरूप २०

६ द्वादश भाव विवेचन २३

७ महादशा विवेचन ५६

८ रवि कुंडली ६०

# निवेदन

सन् १९३१ में 'राहुविचार' प्रकाशित होने के पश्चात् उसमें जो विचारपद्धति हमने दी है उसे पढकर अनेक विद्वान् लोगों की ऐसी इच्छा प्रतीत हुई कि मैं अन्य ग्रहों के विषय में अपने विचार और अनुभव प्रकाशित करूं। किन्तु मेरे शारीरिक व मानसिक कष्टों के कारण आज तक मैं उनकी इच्छा पूरी नहीं कर सका इसके लिए मुझे अत्यन्त खेद है। सौभाग्य से इस वर्ष मुझे थोडी स्वस्थता मिली है और पुनः पाठकों की सेवा करूं इस उद्देश से आज रवि के विषय में 'रवि विचार' नामक एक छोटासा ग्रन्थ लिखकर पाठकों को सादर कर रहा हूं। इसलिए मुझे आनंद होता है। मैं स्वयं इस शास्त्र का जिज्ञासु तथा अभ्यासरत विद्यार्थी-ज्योतिषी हूं, इस कारण मेरे प्रदीर्घ अभ्यास में हजारों कुंडलियों का अवलोकन करते हुए प्राचीन ग्रन्थों के कुछ नियमों का खण्डन करके मुझे नये नियम स्थिर करने पड़े हैं। उदाहरण के लिए प्रभु रामचंद्र की जन्मकुण्डली इस प्रकार दी जाती है—
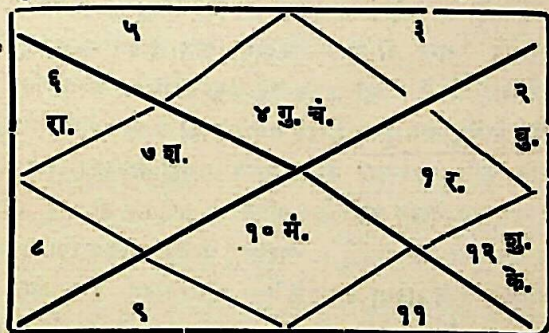
इस पत्रिका में राहु, बुध और चंद्र को छोड कर सब ग्रह उच्च के हैं। इन उच्च ग्रहों के क्या फल होने चाहिए यह कहना है।

मेरे मत से:—(१) लग्न में उच्च गुरु चन्द्र के साथ है—इसका फल वनवास, मां को वैधव्य प्राप्त होना तथा वर्ण घननील (काला) होना है। कर्क राशि में उच्च का गुरु और चन्द्र स्वगृह का होकर भी क्या यही फल मिला?

(२) चतुर्थ में उच्च का शनि—पिता का मृत्युयोग जलदी होना, सौतेली मां से कष्ट।

(३) सप्तम में उच्च का मंगल—स्वयंवर में सीता को जीत कर लाना पडा। यह सीता कौन है? इसके माता पिता का कुछ पता नहीं चलता। राजा जनकने केवल पाल पोस कर वडा किया। (मेरे मत से Illegitimate) इसके कुल गोत्र का पता नहीं चलता। उसको निष्कारण ही दो वार वन में जाना पडा। रावण के घर छह माह विताने पडे और उस पर व्यभिचार का दोष आया। ( सप्तम के मंगल का पूरा फल मेरे 'मंगल विचार' में देखिए ) राम को अपनी पत्नी के लिए युद्ध करना पडा। पति पत्नी के वश में रहता है। रामचंद्र को इच्छा न रहते हुए भी चन्द्रसेनाके घर (परस्त्री के घर ) जाना पडा—कम से कम वैसा आरोप उस पर आया।

(४) दशम स्थान में उच्च का रवि—पिता व कुल ऊंचा था किंतु पितृसौख्य कम।

रवि व शनि इन दोनों उच्च के ग्रहों में प्रतियोग—जिस दिन राज्याभिषेक होने जा रहा था उसी दिन वनवास के लिए प्रस्थान तथा पिता का मृत्युयोग! यह योग पिता के पश्चात् भाग्योदय का है। पिता के रहते सिंहासन पर नहीं आ सके। वार्धक्य में फिर सीता का निर्वासन, अपने ही पुत्रोंसे पराभव, अन्त में विधुर अवस्था इत्यादि इन उच्च ग्रहों के अनिष्ट परिणाम दिखाई देते हैं। यहां पाठक एक शंका उपस्थित करेंगे कि इन सब ग्रहों का केंद्र में केंद्र योग हुआ है इसलिए प्रभु को ये फल भोगने पडे। किंतु मैं कहता हूं कि पहले भाव-फल और उसके साथही कारकत्व, वाद में ग्रह-फल व अंत में योग-फल देखने पडते हैं। पत्रिका में कोई एक ही ग्रह उच्च हो तो भी उसका फल बुरा मिलता है। सारांश, प्राचीन ग्रंथकारोंने उच्च ग्रहों के जो फल वतलाये हैं वे सर्वथा गलत हैं ऐसा कहना पडता है। अन्य ज्योतिषी शक १८१७-१८ में जब शनि तुला में था उस समयमें जिनका जन्म हुआ है ऐसे लोगों की परिस्थिति देखें ऐसा मेरा निवेदन है। रवि के साथ बुध और शुक्र ये ग्रह नित्य ही रहते हैं और कभी अन्य ग्रह भी रवि के साथ होते हैं इस लिए अकेले रवि का फल वतलाना और निश्चित करना कठिन होता है। इन सब वातों का खुलासा मेरे आगे प्रकाशित होनेवाले ग्रंथों में देखना चाहिए।

—लेखक

हणमंतसा नेमासा काटवे

# रवि-विचार

## प्रकरण पहला ।

सूर्य आत्मा जगतस्तथुषश्च ॥ ऋग्वेद १।८।७॥

ज्योतिषां रविरंशुमान् ॥ गीता १०-२१ ॥

पृथ्वी को सूर्य की एक परिक्रमा करने के लिए ३६५ दिन १४ घटि २० पल इतना समय लगता है ऐसा पश्चिम के लोग कहते हैं। हमारे प्राचीन सिद्धान्तकर्ता तथा करणग्रंथकर्ता ३६५ दिन १५ घटि ३१ पल ३१ विपल इतना काल लगता है ऐसा कहते हैं। आधुनिक सुधारणावादी ३६५ दिन १५ घटि २२ पल इतना समय कहते हैं। पृथ्वी सूर्य की परिक्रमा करती है उसी समय सूर्य खुद की परिक्रमा करता है। उसके प्रत्येक चक्कर को २३ घंटे ५६ मिनिट ४ सेकंड इतना समय लगता है। सूर्य सब ग्रहों से करोडों मील दूर है तथापि वही सब ग्रहों का तथा पृथ्वी का पोषक है। वह बीजोत्पादक, बीजारोपक तथा बीजसंवर्धक है इसी लिए सूर्य को ज्योतिष शास्त्र में जगत्पिता ऐसा नाम दिया है।

हमारे वेदांत शास्त्र में आत्माको सूर्य ही कहा है। स्थावर जंगमात्मक पूरे चराचर जगत का आत्मा सूर्य है। वैदिक काल में आर्योंने सूर्य का महत्व समझा था। वे मानते थे कि वह ही सारे जगत् का निर्माण कर्ता-विधाता है।

सूर्य की स्थिति दो प्रकार की है। एक भासमान और दूसरी अदृश्य होकर भासमान न होनेवाली। पहली भासमान होनेवाली स्थिति यह है कि दिन भर वह अपनी आखों से दीखता है। उसके धूप का ताप जान पड़ता है और उसका प्रकाश भी हम देखते हैं। सूर्यसे अपने को जो उष्णता मिलती है वह 'निगेटिव्ह' है।

सूर्य का दूसरे प्रकार का तेज भासमान न होनेवाला किन्तु सारे स्थावर जंगमात्मक चराचर वस्तुओं में समाया हुआ-सर्व-व्यापी है। यही तेज अत्यंत महत्वपूर्ण है।

इसी तेज का संशोधन करने के प्रयत्न आर्य लोगोंने वैदिक कालसे जारी रखे हैं। आत्मविकास के बलपर इस तेज का दर्शन करने के लिए ज्ञान योग, राज योग, भक्ति योग, हठ योग इत्यादि अनेक योग मार्ग खोजकर उनको सिद्ध करने के लिए तपश्चर्या करना चाहिए ऐसा कहा है। जिसे हम वेदांत में परब्रह्म कहते हैं वही यह तेज है। प्रत्यक्ष तेज से अप्रत्यक्ष विश्वशक्ति को प्रेरणा मिलती है।

आकाश से एक प्रकार के किरण पृथ्वी पर आते हैं। ऐसा प्रतीत होने पर पश्चिम के शास्त्रज्ञोंने इस विषय का गहराई से संशोधन किया। डॉ. हेसने १९१० में प्रकाशित किया कि ये किरण सूर्य के हैं और सीधे सूर्य से ही पृथ्वी पर आते हैं। किन्तु अमरीका के श्रेष्ठ खगोलवेत्ता नोबल प्राइझ विजेता डॉ. मिलिकनने हेस के इस विधान का खण्डन करने का प्रयत्न किया। उनका कहना है कि ये किरण सूर्य से ही आते हों तो वे सिर्फ दिन में ही आने चाहिए। किन्तु वे तो रात को भी आते हैं। इस लिए उनकी उत्पत्ति सूर्य से न होकर आकाशगंगा से ही होनी चाहिए। मेरे विचार से वेदान्त का ज्ञान न होने के कारण ही डॉ. मिलिकन जैसे पाश्चात्य शास्त्रज्ञ इस प्रकार गलत दिशा को जाते हैं। अब व्हिहास नामक शास्त्रज्ञ

ने अपने Estoric Astrology इस ग्रन्थ में सूर्य के इन अदृश्य किरणों को मान करके विशेष ऊंहापोह किया है। सारांश रवि का तेज दो प्रकार का है। उत्पत्ति करना यह पहले तेज का कार्य है और लय करना यह दूसरे तेज का कार्य है। पहले तेज के कारण जीव शरीर रूप से जन्म लेकर वासना में–माया मोह में–अटकता है और दूसरे तेज के कारण वासना का क्षय होकर शांति–समाधान प्राप्त करके यही जीव आत्म स्वरूप में विलीन होता है।

अति प्राचीन काल में पांचवी सदी तक ऐसी कल्पना थी कि सूर्य पृथ्वी की परिक्रमा करता है। बाद में पांचवी सदी में बिहार प्रांत के आर्यभट्ट नामक पंचांगशास्त्रज्ञने आर्य सिद्धान्त नामक ग्रन्थ में लिखा कि पृथ्वी सूर्य की परिक्रमा करती है।

पश्चिम के देशों में भी १५–१६ वीं सदी तक अर्थात् गॅलि-लियो के समय तक यही मत था कि सूर्य पृथ्वी की परिक्रमा करता है। गॅलिलियो ने ही पहले बताया कि सूर्य स्थिर है और पृथ्वी ही सूर्य की परिक्रमा करती है। किन्तु ग्रीस के महान् तत्ववेत्ता अफलातून और अरस्तू इस मतके प्रतिकूल थे इसलिए गॅलिलियो को प्राणांतिक विरोध हुआ। लेकिन कालान्तर में उसी का तत्व जगत् को मानना पड़ा।

हमारे देश में गॅलिलियो के एक हजार वर्ष पूर्व ही यह तत्व आर्य सिद्धान्त कर्ता ने प्रस्थापित किया था यह हम भारतीयों के लिए अभिमान की बात है।

सूर्य स्थिर होकर भी गतिमान् है। सारी ग्रहमाला को वह एक सूत्र में नियमबद्ध गति से अपने चारों ओर घुमाता है और सारे ग्रहों को एक एक बार अपने तेज से अस्तंगत कर देता है।

# प्रकरण दूसरा

## रवि का उच्च-नीचत्व

उदय के समय सबको सुख देनेवाला रवि मध्यान्ह में मस्तक पर आया कि अत्यंत असहनीय होने लगता है। वही बादमें अस्त के समय रम्य और सुखद होता है। अपने उदयास्त से प्रातः, मध्यान्ह, और सायंकाल अवस्थाएं प्रति दिन निर्माण करनेवाला रवि विभिन्न राशियों में प्रवास करते हुए सृष्टि में भी गर्मी, बरसात और सर्दी ऐसी तीन अवस्थाएं निर्माण करता है। वसंत ऋतु के समाप्त होते होते गरमी शुरू होती है। इस समय चैत्र-वैशाख में रवि मीन से मेष में आता है। इस समय पृथ्वी सूर्य के निकट जाती है इसीलिए रवि इतना तापदायी होता है।

रवि मेष में-अपने उच्च से नीचे वृषभ में आते समय उदार व दयाशील बनता है। मानों जगत को ताप देने के अपराध का विचार कर रहा हो। आगे मिथुन में अपने कृत्य का समर्थन करने लगता है। किन्तु कर्क राशि में आने पर उसी को उसका पश्चाताप होता है और उसके आँखों में पानी आता है, वही बरसात है। उसी प्रकार आगे वह अपने गृह सिंह राशि में प्रवेश करता है। उसकी मनोवृत्ति में परिवर्तन होता है। वह शांत और वैराग्यशील होता है। उसकी दृष्टि समता, इन्साफ और वेदान्त इन बातों पर झुकती है। इस समय वह कन्या राशि में होता है। पृथ्वी से दूर दूर जाता है।

अब वह अपने नीच राशि में-तुला में आता है और धर्म से -न्याय से-समता बुद्धि से बरताव करने लगता है। इस समय सृष्टि भी वैभव संपन्न होकर शान से झूलती है। नई शोभासे अलंकृत दीखती है।

ऊपर के विवेचन का सारांश यह है कि रवि मेष राशि में तापदायी होता है और तुला राशि में कल्याणकारक और सुखदायी होता है। इसका तात्पर्य यह है कि रवि उच्च राशि में तापदायी और नीच राशि में हितकारक है। और यही सिद्धांत अन्य ग्रहों के विषय में भी सत्य है ऐसा मेरा अनुभव है। उच्च राशि में कोई भी ग्रह सुखदायी, कल्याणकारी नहीं होता। उच्च पद प्राप्त हुआ कि वह स्वभावतः नीचता की ओर झुकने लगता है। अति उच्च पद पर बड़ा आदमी भी बिगड जाता है यही सत्य है।

---

# प्रकरण तीसरा

## रवि का कारकत्व

सूर्य किरणों से रोग दूर होते हैं यह अनुभव सिद्ध बात है। इसीलिए रवि आरोग्यदाता है।

चंद्र मनका कारक है और चंद्र को रवि से प्रकाश मिलता है। मनको शुद्ध करके मार्ग पर लाने का कार्य विवेक रूपी हृदयस्थ परमात्मा करता है। मन चंद्र है और रवि हृदयस्थ परमात्मा। इसीलिए रवि को 'मनःशुचिकारक' कहा है।

'पितृप्रतापारोग्यमनःशुचिऽचिज्ञानोदयकारकः रविः।'

प्रभाव, खुदका आत्मा, पिताका पराक्रम, रोगों के प्रतिकार की शक्ति, आत्मकल्याण इत्यादि विषयों का विचार रवि पर से करना चाहिए ऐसा 'जातक पारिजात' इस ग्रंथमें कहा है।

बाघ, सिंह, पर्वत, ऊनी कपडे, सोना, शास्त्र, विषसे शरीरका दाह, औषध, राजा, म्लेच्छ, महासागर, मोती, वन, लकडी, मंत्र

इत्यादि का कारकत्व 'सारावली' कर्ता ने रवि पर कहा है। इनमें विषका कारक मंगल तथा म्लेच्छों का कारक राहु होना चाहिए। उसी प्रकार मंत्र विषय शुक्र का है ऐसा मेरा मत है।

राज्य, प्रवाल, लाल वस्त्र, माणिक, आखेट के जंगल, पर्वत, क्षत्रियों के कर्म इत्यादि विषयों का कारकत्व 'बृहत्पाराशरी' कर्ता ने रवि पर बताया है।

आत्मप्रभाव, शक्ति, पिता की चिंता इनका कारक रवि ही है ऐसा विद्यारण्य का मत है।

पुत्र की पत्रिका से पिता के सुखदु:खों का विचार रवि शनि के शुभाशुभ योग से ही जाना जा सकता है। दूसरा नियम यह है कि पंचमेश या नवमेश ३-६-८-१२ इन स्थानों में हो तब ही यह विचार करना चाहिए।

कालिदास:—१ आत्मा २ शक्ति ३ अति दुष्ट ४ किला ५ अच्छी ताकत ६ उष्णता ७ प्रभाव ८ अग्नि ९ शिव की उपासना १० धैर्य ११ कांटेदार वृक्ष १२ राजकृपा १३ कडुआ १४ वृद्धता १५ पशु (गाय भैंस आदि) १६ दुष्टता १७ जमीन १८ पिता १९ रुचि २० आत्मप्रत्यय २१ ऊर्ध्व दृष्टी २२ जिसकी मां डरपोक हो (One born to a timid woman) २३ मृत्युलोक २४ चौकोन (Square) २५ हड्डी २६ पराक्रम २७ घास २८ कोंख (The belly) २९ दीर्घ प्रयत्न ३० जंगल ३१ अयन ३२ आंख ३३ वनमें संचरण ३४ चौपाये पशु ३५ राजा ३६ प्रवास ३७ व्यवहार ३८ पित्त ३९ तपश्चर्या ४० गोलाई ४१ आंख के रोग ४२ शरीर ४३ लकड़ी ४४ मनकी शुद्धता ४५ सर्वाधिकारी (Dictatorship) ४६ रोगों से मुक्तता ४७ सौराष्ट्र देश का राजा ४८ अलंकार ४९ मस्तिष्क के

रोग ५० मोती ५१ आकाश का अधिपती ५२ नाटा ५३ पूर्व दिशा का अधिपती ५४ तांबा ५५ रक्त ५६ राज्य ५७ लाल वस्त्र ५८ अंगूठी में लगाने के नगीने, खनिज के पत्थर ५९ लोकसेवा ६० नदीतट ६१ प्रवाल ६२ मध्यान्ह में बलवान ६३ पूर्व ६४ मुंह ६५ दीर्घकोपी ६६ शत्रुओं पर विजय ६७ सचाई ६८ केशर ६९ शत्रुता ७० मोटी रस्सी।

**हारवुडः**—Manager, Foreman, Bosses, Rulers, Shoot, Masters, Fathers, Husbands, High Constables, Mayor Magistrates, Aristocracy, Ruling bodies like town-councils and parliaments, Kings, Royalty, Master of ceremonies, Public officers, Business-managers, Directors, State officials Civil servants, Palaces, Town-halls, Courts, Theatres, Banqueting halls, Dancing halls, Exhibitions, Spectacular displays, Social gathering, ceremonies, Magnificent public structures, Big house with many rooms, Gold ornaments, Emblazonments, Special Occasions.

**अज्ञातः**—पुण्य, बडे भाई का सुख, वैद्यक शास्त्र, छोटे प्रवास, बिजली, बिजली का प्रवाह, बिजली पर निर्भर धंदे, जवाहरात, सोना, सुनार, गिलट काम।

## मेरा मत

नेत्रवैद्यक, राजकारण, शरीरशास्त्र, X rays, Cosmic rays, प्लेटिग्नम्, रेडियम, हेलियम् रेडियो Boiler, नाविक विद्या (Navigation), राज्यसत्ता, राज्य में प्रचलित राजभाषा, सेक्रेटरिएट, असेंब्ली, गवर्नर, गवर्नर जनरल, पारसी लोग ये रवि के कारकत्व में हैं। अबतक ये सब कारकत्व कहे गये हैं। प्राचीन ज्योतिष ग्रंथकार यह नहीं बताते कि इन कारकों का उपयोग किस स्थान पर कैसा करना चाहिए। इस विषय

में बहुत दिन तक विचार करने के पश्चात् आगे दिया हुआ वर्गीकर
करके उसका उपयोग कहां और किस प्रकार करना चाहिए य
निश्चित किया है। वह इस प्रकार हैं—

पिता, प्रताप, आरोग्य, मन की शुद्धता, रुचि, ज्ञान, धं
शक्ति, आत्मप्रभाव, पिताकी चिंता, अच्छी ताकत, हृदय, पीठ, ना
चक्र, कुंडलिनी, प्रभाव (लोगों पर रुआब), क्षेत्र कर्म, शिव
उपासना (यूरुप में God, the holy ghost), राजकृपा, (रावसाह
रायबहादुर आदि उपाधि प्राप्त करना) पिता की भूमि, हड्डिय
आत्मप्रत्यय, ऊर्ध्व दृष्टि, दाहिनी आँख, व्यवहार, मन, शरीर, नार
रक्त, लोकहित, पुण्य, पंडितों की बुद्धि-संपन्नता, शत्रुता, बडे म
का सुख, प्रवास, बिजली, जौहरी, क्षत्रिय कर्म, श्रेयस्, संघट
व्यवस्थापक, Foreman (ज्यूरी में मुख्य), रेल्वे कारखाने में बॉय
के इंजीनियर, धंदे में व्यवस्थापक, Cosmic rays, वृद्धता, तप,
सिविल अधिकारी, मेयर, मॅजिस्ट्रेट, स्कूल मास्टर, बिजली द्वारा च
वाले धंधे, गिलट काम, जवाहरात, सोना, मोती, तांबा, माणि
प्लेटिग्नम, रेडियम, हेलियम, अलंकार, प्रवाल, रेडियो, एक्स-रे
फोटो लेने का उद्योग, औषध, ऊन, ऊनी कपडे, कच्चा रेशम, के
पशु, घास, लकड़ी, धान्य, पत्थर, नेत्र वैद्यक Eye specialist, र
चंदन, साधा चंदन, (चंदन का व्यापार पारसी लोक करते हैं नथ
मलाबार म्हैसूर और कुर्ग प्रांत से ठोक पेकबंद माल लाकर बंबई
हिंदुस्थान के विभिन्न बडे शहरों में पारसी लोगों को माल पहुँचाने
लिए बहुत से गुजराती यह व्यापार करते हैं। मोटी रस्सी, (मोटी र
तथा उसे बनाने का धंधा हिंदू लोगों में निचले वर्गों में कैकाडी, मां
रामोशी, कातवडी, भील, कातकरी आदि करते हैं, किंतु हाल में मिलों

काम के लिए तथा नाविकों को जहाज ठहराने के लिए, नीचे से ऊपर अधिक वजन का सामान ले जाने के लिए लगनेवाला रस्सा तथा अन्य छोटी रस्सी कलकत्ता व जर्मनी में बनाये जाते हैं, और बंबई में नागदेवी स्ट्रीट पर इसके व्यापारी हैं।) दूत कर्म (पुराने जमाने में यह धंधा होता था, हाल में पोस्ट व टेलिग्राफ, टेलिफोन चालू होने से यह धंधा बंद हुआ है।) टेलिव्हिजन। ये सब कारकत्व जन्म कुंडली तथा प्रश्न कुण्डली में विचार योग्य समझने चाहिए।

## मेदिनीय ज्योतिष में उपयुक्त कारकत्व

हथियार, राजा, राज्य, राजकीय जंगल, किला, सर्वाधिकारी ( Dictatorship ), म्लेच्छ, दुर्ग, शत्रु का स्वामित्व। पाश्चात्य ज्योतिषियोंने दिया हुआ कारकत्व—नेता, राजकीय सत्ताधिकारी, धर्मगुरु, किसान, श्रीमानों का राज्य, म्युनिसिपालिटी, जिला कौन्सिल, असेंब्ली वगैरह शासक संस्थाएं, उत्सवों के अध्यक्ष, परदेशों से व्यवहार करने वाली संस्थाएं, थिएटर, Banquetting hall, नृत्य मंदिर ( वास्तव में यह कारकत्व शुक्र का समझना चाहिये ), प्रदर्शन ( यह राहु के कारकत्व में चाहिये। ) कायदे बनाने वाले ( एम्. एल. ए. वगैरह ) परदेशों के राजदूत, स्नेह सम्मेलन तथा उत्सव ( यह विषय भी शुक्र के ही अमल में चाहिये ), राज प्रासाद, टाऊन हाल। रवि के प्रभाव से राजा अन्यायी व एकतंत्र होता है।

## शिक्षा में कारकत्व

Politics—देश की राजनीति ( यह विषय यूनिवर्सिटी में बी. ए. में पढाते हैं। ), Optholmology नेत्र वैद्यक शास्त्र, अंग्रेजी भाषा, राष्ट्र भाषा, राज भाषा—जैसे निजाम के राज्य में उर्दू,

मैसूर में कनडी, कूचविहार में बंगाली। इनको Court Lanaguges कहते हैं। Anatomy शरीर शास्त्र.।

## कहीं भी उपयोग न होनेवाला कारकत्व।

व्याल (शेर), शैल (पर्वत), अब्धि (सागर), कांतार (जंगल), कुक्षि (कोंरव), सौराष्ट्र का राजा, नदी का तट, मृत्यु लोक, अयन, भीरूत्पन्न—डरपोक स्त्री से उत्पन्न हुआ ऐसा (One born to a timid woman) यह अर्थ अनुवादक पंडितभूषण व्ही, सुब्रम्हण्य शास्त्री, बी. ए. (बेंगलूर) देते हैं। किंतु 'भीरूत्पन्न' का अर्थ 'जिसको देखने से इससे किस तरह भाषण करें ऐसा भय उत्पन्न करने वाला' ऐसा है। तात्पर्य रवि के अमल में रहने वाले आदमी चेहरे से और बोलने से रुबाबदार होते हैं। आकाश का अधिपति, कांटेदार वृक्ष।

**स्वभाव का कारकत्व**—अति तीक्ष्ण, धैर्य, दीर्घ प्रयत्न, तपश्चर्या, दीर्घ, कोपी, शत्रुता, नियमितता, सात्त्विक।

**पाश्चिमात्य ज्योतिषी**—Like the Sun in the solar system, the Sun-leo person likes to be in the centre of every thing as Supreme administrator.

यह स्वभाव का कारकत्व रवि के स्वभाव में प्राप्त करना होता है। अत्र राशि के अनुसार विभाग करके कारकत्व कहते हैं। अकेले रवि पर इतने विषयों का कारकत्व दिया है। वह एक ही राशि में या एक ही स्थान में देखने को नहीं मिलता। उदाहरण के लिए, पाश्चात्य ज्योतिषीने रवि का एक कारकत्व स्कूल मास्टर ऐसा दिया है। यह चाहे जिस राशि के और चाहे जिस स्थान के रवि में

नही मिलता। मिथुन या धनु राशि में एवं लग्न, तृतीय, पंचम, नवम, सप्तम और ग्यारहवें स्थान में रवि हो तो ही मास्टर होता है। दूसरा उदाहरण–धनु व तुला राशिमें रवि हो तो कानून के पंडित होते हैं किंतु इन राशियों में वह स्थानबली हो तो ही होते हैं। वृश्चिक में रवि हो तो सर्जन और डाक्टर होते हैं इसके लिए भी रवि स्थानबली होना चाहिए। इसलिए आगे विभाग करके लिखते हैं।

मेष—क्षात्रकर्म, संघटक, फोरमन, तांबा, माणिक, प्रवाल, तथा ऊनी कपडे।

वृषभ-दवाइयाँ, पशु, घास, लकडी, किसान, नृत्य एवं नाटयगृह।

मिथुन—स्कूल मास्टर, जवाहरात, कोर्ट की भाषा।

कर्क—बिजली, उस पर चलने वाले धंधे, नेत्र वैद्यक।

सिंह—जौहरी, केशर, डिक्टेटर, राजा, Autocracy.।

कन्या—मैनेजर, गिल्ट, अनाज, सार्वजनिक कार्यालय।

तूला—सिविल ऑफिसर, प्लेटिनम, परदेशों के राजदूत।

वृश्चिक—पत्थर, रक्तचंदन, चंदन, कच्चा रेशम, शस्त्र, शरीरशास्त्र ( Anatomy )

धनु—सोना, रेडियम, ज्यूरर्स, फादर्स (धर्मगुरु), Legislators कानून करने वाले।

मकर—Mayor नगराध्यक्ष, कौन्सिलर, असेंब्ली, नगरपालिका, जिला या लोकल बोर्ड, सेक्रेटरिएट, कौंसिल आफ स्टेट।

कुंभ—मोटी रस्सी बनाने वाले।

मीन—एक्स-रे फोटो ग्राफर, मोती, हेलियम, प्रदर्शिनी।

**एक उदाहरण**—एक आदमी बैसाख महिने में–जब रवि वृष में है—आकर प्रश्न करता है कि क्या मैं घास, लकडी या पशु (गाय, भैंस, घोडे और कुत्ते) का व्यापार कर सकता हूं ? इस सम वृषभ का रवि सप्तम में है। इस लिए उसकी परिस्थिति देख उसके अनुकूल इन तीनों में से कोई एक धंधा बतलाना चाहिए जि वह कर सके। इस प्रकार कारकत्व का उपयोग करना चाहिए

पश्चिम के ज्योतिषियों ने करीब २ सभी धंधे रवि के मान व उनका विभाजन राशि के अनुसार किया है।

**मेष में रवि**–Organisers, Leaders, Architects, Designe Company–Promotors, Phrenologists, Character–Reader Agents, Brokers, Appraisers, Auctioneers, Surveyors, Sale man, Detectives, Guides and courtiers, Travelling Compani House and Estate agents, Inspectors, Foreman, Manage Lecturers, Novelists, writers of short stories, Photographe Reformers, Eloctionists.

**वृषभ में रवि**–Bankers, Stock–Brokers, Treasure Cashiers, Speculators, Mechanical and laborious pursui Singers, Actors, Magnetic healers, Doctors and Nurses, Ag culturists, Farmers, Fruit growers, Gardeners, Builders, B discounters, Financial-Agents, Book-Binders, Manufactur Chemists, Compositors, Cressmakers, Florists, French-Paint and Decorators, Japanners, Collectors, Insurance-Agen Taxidermists.

**मिथुन में रवि**–Book-keepers, Clerks and Commercia travellers, Literary persuits, Editors, Reporters, New papermen, Good–accountants, Solicitors, Attendents, P office officials, clerks. Decorative artists, School Maste

Guides, Journalists, Lecturers, Milliners, Photographers, (X Rays-Katwe) Post-men, Railway-employees, Secretaries, Translators.

कर्क में रवि–Historians, Naval Captains, Nurses, Caterers, Hotel-keepers, Barmaids, Confectioners, Actors and Actresses, Companinons, Cooks, Laundresses, Dealers in second-hand Clothing, Second-hand-Book-sellers, Dress makers, Metrons, Midwives, Mineral Water Manufacturers, Researchers, Stewardesses.

सिंह में रवि–High Posts, Jewellers, Goldsmiths, writers of love stories or dramatic sketches, Musicians, and Poets, Trusty-Managers.

कन्या में रवि-Trade, Agents, Food Providers.

तुला में रवि-Overseers, Librarians, Secretarians, Stage-Managers and Musical directors, Decorators. Arrangers, House-keepers.

वृश्चिक में रवि Dyers, Chemists, Businessers connected with oils, They make good surgeons and Dentists, Detectives, Butchers, Ironsmiths.

धनु में रवि–Commander, Teaching, The Ministry, Law, Astronomy, Astrology, Photography, Designing, Inspectors, Equestrians. Horse-Dealers, Sports-men.

मकर में रवि–The land and Building speculations, Scientific Reserchers, Writers, Contractors, Builders, Upholsters, Designers, Decorators, Large speculations Elaborate Enterprises.

कुंभ में रवि-Wood Artists,Designers, Musicians, Electricity, Writers, Railways.

मीन में रवि–Naval Captain, Travellers, Advance Agents, Novelists, Book-Keepers, Accountants, Painters, Mediums.

यह सब कारकत्व अकेले रवि का और बारहों राशियों का है ऐसा मैं नहीं मानता। वैसा मेरा अनुभव भी नहीं है। मेरा अनुभव अलग है। ज्योतिषियोंने स्वतंत्रता से अपने २ अनुभव से यह निश्चित करना चाहिए। मैंने केवल एक दिशा बताई है।

---

## प्रकरण ४ था

### रवि के विषय में अधिक विवरण (ग्रहयोनि भेदाध्याय)

हमारे प्राचीन ज्योतिर्विदोंने रवि के विषय में बहुतसा शास्त्रीय और तात्विक संशोधन किया है। उसकी अब थोडी चर्चा करेंगे।

**आचार्य—कालात्मादिनकृत, राजा नो रविः, रक्तश्यामो भास्करो वर्णस्ताम्रः देवता वह्निः, प्रागाद्या।**

**अर्थ**—रवि कालपुरुष का आत्मा है। रवि राजा है। तांबे के समान कालिमा लिए हुए लाल रंग का है। रवि की देवता वह्नि-अग्नि है। यह पूर्व दिशा का स्वामी पापग्रह है। चार वर्णों में इसका वर्ण क्षत्रिय है। यह सत्वगुण से युक्त है। पुरुष ग्रह है। आचार्योंने इसका कोई तत्व नहीं कहा, यह आश्चर्य की बात है। सारे विश्व में पाँच तत्व भरे हैं—आकाश, तेज, जल, पृथ्वी और वायु। किंतु इस ग्रहको इनमें से कोई तत्व नहीं कहा है। मेरी समझ में रवि को तेज तत्व देना चाहिए। सत्व रज और तम इन तीन गुणों में इसको सत्वगुणी कहा है। किंतु यह पाप फल देता है। सात्विक मनुष्य का आचरण पापयुक्त कैसे होगा ? पापयुक्त रहा तो वह सात्विक कैसा माना जायगा ? मेरी समझ में इसे रजोगुणी मानना चाहिए।

मधुपिंगलहक् चतुरस्रतनुः पित्तप्रकृतिः सवितालपकचः ।

स्थान-वेदगृह, मोटा वस्त्र, तांबा, उत्तरायण में बलवान ।

रवि की दृष्टि—शहद के समान लाल रंग—यह कडी धूप को देखकर निश्चित किया होगा। धूपको सूक्ष्म दृष्टि से देखो। वह कुछ पीले लाल रंग की दिखती है। इस लिए जिन मनुष्यों के रवि मुख्य होता है उनकी नजर बहुत तेज़ होती है तथा आंखों के कोने में लाल रेखाएं अधिक होती हैं। शरीर की आकृति चौकोर के समान होती है। वास्तव में रवि गोल दिखाई पडता है, इसलिए श ीर का आकार गोल होना चाहिए। किंतु अनुभव दूसरा ही आता है। फलतः रवि रूखा और उष्ण होने से पित्तप्रकृति है यह स्वाभाविक ही है। शरीर पर बाल बहुत कम होते हैं। स्त्री राशि में हो तो बिलकुल नहीं होते परन्तु पुरुष राशि में हो तो होते हैं। रवि यही पूर्ण परब्रह्म है। इसलिए उसका निवासस्थान मंदिर या देवगृह कहा यह ठीक ही है। रवि के अमल में मोटा वस्त्र दिया है इसकी उपपत्ति नहीं लगती। धातु—तांबा—रवि के लिए तांबा यह धातु कही है। यह रंग पर से ही कही होगी। वास्तव में इसके अमल में सोना चाहिए। हमारे शास्त्रकारों ने रवि के लिए कोई भी ऋतु नहीं कहा है। यह एक ध्यान देने लायक बात है। रवि ही सब ऋतुओं को उत्पन्न करता है और उसके लिए एक भी ऋतु नहीं है। मेरी समझ में ग्रीष्म ऋतु पर रवि का अमल होना चाहिए। उसको यही ऋतु योग्य है। यह उत्तरायण व दक्षिणायन निर्माण करता है। उसको उत्तरायण का अधिपति कहना चाहिए। रवि उत्तरायण में बलवान होता है।

वैद्यनाथ—कालस्यात्मा भास्करः। दिनेशो राजा। भानुः श्यामलोहितः। प्रकाशकौ शीतकरक्षपाकरौ। रविः पृष्ठेनोदेति सर्वदा। विहगस्वरूपो वासरेशो भवति। शैलाटविसंचारी। पंचाशर्कः। ताम्रधातुस्वरूपः। द्युचरौ अरुणौ। देवता वह्निः। माणिक्यं दिननायकस्य। स्थूलाम्बरम्। प्रागादिको भानुः। क्रीडास्थानं देवगृहम्। सत्त्वप्रधानः। नराकारो भानुः। अस्थि, कटु, दक्षिणायनबली, स्थिर।

पिछले पृष्ठ में वर्णन आया है। उससे भिन्न शब्दों का ही विचार करना है। रवि सर्वदा पृष्ठभाग से उदय प्राप्त करता है। किसी का जन्म कैसे हुआ यह निश्चित करने के लिए यह कल्पना होगी। किन्तु रवि प्रतिदिन सामने ही उदित होता है। रवि का भ्रमण प्रतिदिन आकाश में से होता है। इस लिए उसे पक्षी स्वरूप कहा है। वन और पर्वतों में संचार करनेवाला इस कल्पना का आधार समझ में नहीं आंता। पंचाशर्क का अर्थ भी स्पष्ट नहीं होता। माणिक नामका रत्न रवि का कहा है क्यों कि उसका रंग लाल होता है। अस्थि-हड्डी—बहुत काल तक टिकती है और कठिन है इसलिए। कडुआ—रवि रुचि का कारक है। उसमें इसका समावेश करना ठीक होगा। स्थिर—इस विषय में पहले कहा है। यहाँ एक ही कहना है। रविप्रधान कुंडली के दो ही लग्न होते हैं एक वृश्चिक और दूसरा धनु। इसमें वृश्चिक स्थिर है तो धनु अस्थिर है। इससे प्रगट होता है कि रवि में दोनों गुण हैं।

अर्केण मन्दः—शनि रवि के द्वारा पराजित होता है ऐसा वैद्यनाथ ने कहा है। किंतु रवि शनि के द्वारा पराजित होता है ऐसा मेरा अनुभव है। रवि कब बलवान होता है? स्वोच्चस्वकीयभवने स्वदृगां च होरावारांशकोदयगणेषु दिनस्य मध्ये। राशिप्रवेशसमये सुहृदंशकादौ

मेषे रणे दिनमणिर्बल्वानजस्रम् ॥ रवि अपनी उच्च राशि मेष में बलवान होता है। बलवान तो होता है किंतु फल उलटे मिलते हैं। स्वकीयभवने याने सिंह राशि में उतने अच्छे फल नहीं मिलते ऐसा मेरा अनुभव है। अपने द्रेष्काण और होरा में वह अति बलवान होता है। रविवार को, इस वर्णन में कोई तथ्य नहीं है। उत्तरायण में बलवान कहा है। किंतु मेरा ऐसा अनुभव है कि रवि दक्षिणायन में ही प्रबल होता है। क्योंकि जगत् के बडे राजनीतिज्ञ, नेता, कूटनीतिज्ञ, डाक्टर, सर्जन, कानून विशेषज्ञ, वैज्ञानिक, मील मालिक, कवि, उपन्यासकार, नाटककार इनका जन्म बहुतायत से दक्षिणायन में ही हुआ है। दिनस्य मध्ये-दोपहर में करीब बारह बजे वह बलवान होता है। राशिप्रवेशसमये-एक राशि से दूसरे राशि में जाते समय, मित्र ग्रह के अंशों में और दशम में होते हुए वह बलवान होता है।

सदा शिरोरुग्ज्वरवृद्धिदीपनः क्षयातिसारादिकरोगसंकुलैः।
नृपालदेवावनिदेवकिंकरैः करोति चित्तव्यसनं दिवाकरः॥

रवि पर इतने रोग कहे हैं। ये रोग किस स्थान में और किस लग्न में विशेषतासे दिखाई देते हैं यह शास्त्रकारों ने नहीं कहा है। मेरे अनुभव में मेष, सिंह, धनु इन लग्नों में रवि धन स्थान में हो; मिथुन, तूल, कुंभ इन लग्नों में रवि व्यय स्थान में हो; वृषभ, कन्या, मकर इन लग्नों में रवि अष्टम में हो; कर्क, वृश्चिक, मीन इन लग्नों में रवि दशम या छठवें में हो तो ये रोग होते हैं। अन्य स्थानों में रवि हो तो ये अनुभव नहीं आते। दूसरी शंका यह है कि जब रवि स्वयं नीरोग है तो इन रोगों का आरोप उस पर कैसे किया यह समझ में नहीं आता।

जयदेव कवि—प्राच्यादिशा, रविर्नरः, अर्को ब्रुवतेऽरण्यचारिणः, मध्याह्नम्, अर्कौ व्योमदर्शिनौ, सविता मूलम्, अर्के चतुष्पदौ, अर्कौ पूर्ववक्त्रौ, सूर्यः क्षितीशः, अवनीशो दिनमणि मार्तण्ड; स्थविरो ग्रहः, अर्कःप्रकृत्या दुःखदो नृणाम्, विनाशो क्षत्रियाणा सूर्य दिन।

सूर्य का स्थान—देवस्थान। रत्न—माणिक। इनमें बहुतस विवेचन पिछले पृष्ठों में आया है। यहां सिर्फ पांच बातोंप विचार करेंगे।

अर्को ब्रुवतेऽरण्यचारिणः—रवि अरण्य में संचार करता है ऐस कहा है। रवि आत्मज्ञान का कारक है इसलिए रविप्रधान व्यक्ति परमार्थ योग प्राप्त करने के लिए जंगल में एकांत में रहते हैं। इसीसे यह कल्पना निकली होगी। अर्कौ व्योमदर्शिनौ—रवि की दृष्टि ऊप होती है यह कहा है। इसका आधार एकही कल्पना होगी वह या कि सुबह उदय होते समय रवि के किरण पहले ऊपर आकाश में दिखते हैं और संध्याको अस्त होते समय भी वे ऊपर आकाश में दिखते हैं। इससे व्योमदर्शिनौ ऐसा निश्चय किया होगा। सविता मूलम् इसकी उपपत्ति नहीं लगती। अर्कौ चतुष्पदौ-रवि चौपाये पशुओं का कारक है। वैद्यनाथ कहते हैं कि रवि पक्षी स्वरूप है और जयदेव कहते हैं कि वह चौपाये के स्वरूप का है। वैद्यनाथ की उपपत्ति ठीक मालूम होती है किंतु जयदेव की नहीं। अनुभव से देखना चाहिए। अर्कौ पूर्ववक्त्रौ—सूर्य का मुख पूर्व की ओर यह कल्पना ठीक नहीं मालूम होती है। क्योंकि उदय होते ही सूर्य के किरण पश्चिम की ओर फैलते हैं। इसलिए इसका मुख पश्चिम की ओर मानना चाहिए। सूर्य अस्त होते समय भी उसके संध्या के

किरण पूर्व की ओर नहीं आ सकते। इन दोनों कारणों से पश्चिम की ही मानना योग्य मालूम होता है। केवल वह पूर्व को उदित होता है और पूर्व दिशा का अधिपति है इसलिए पूर्व मुख की कल्पना की गई है। अर्कः प्रकृत्या दुःखदो नृणाम् रवि शरीर को पीडा देता है।

## मेरे मत से रवि का राशि फल।

मेष–बुरा। वृषभ–सामान्य। मिथुन–एक ओर से अच्छा, दूसरी ओर से बुरा। कर्क–अच्छा। सिंह–बुरा। कन्या–सामान्य। तुला–बहुत अच्छा। वृश्चिक–अच्छे बुरे का मिश्रण फिर भी अच्छा समझ सकते हैं। धनु–अच्छा। मकर–साधारण। कुंभ–बुरा। मीन–साधारण।

## रवि का मूल स्वभाव

If the sun is well dignified the disposition is noble, generous, proud, magnanimous humane, and affable, friendly and generous to enemy, one of few words, and fond of luxury and magnificence. उदार हृदय का, मानी, एक खास बडप्पन लिए हुए होता है। इन्सानियत से रहता है। आये गये अतिथियों का उचित सम्मान करता है। स्नेहभाव से वर्ताव करता है। शत्रु के साथ भी खुले दिल से रहता है। कम बोलता है। विलास प्रिय होता है। भव्य, निर्भय, पवित्र, सचाई से रहने वाला, सबकी फिकर करने वाला तथा संकट में आये हुए को योग्य रास्ता दिखाने वाला होता है। If illdignified pride, arrogance, want of sympathy. रवि दूषित हो तो गर्वीला, उद्धत, हमदर्दी न करने वाला, दुष्ट, गप्पें हाकने वाला, एकाकी, एकांत प्रिय, लोगों से हमेशा झगडा करने वाला होता है।

---

# प्रकरण ५ वाँ

## रवि का मूल स्वरूप

हमारे प्राचीन शास्त्रकारोंने रवि के संबंध में स्वतंत्र अर्थात् व
किसी भी राशि में नहीं है ऐसी कल्पना करके रवि का मूल स्वरू
कहा है।

आचार्य—मधुपिंगलदृक् चतुरस्रतनुः पित्तप्रकृतिः सविताल्पकचः
पित्तप्रकृतिः समगात्रःप्रतापी अल्परोमवानर्कः ॥

इन शास्त्रकारों का निम्नलिखित विषयों के संबंध में एकमत है—
लाल आखें, शरीर का आकार चौकोर, पित्त प्रकृति, शरीर पर बा
कम होना। वैद्यनाथ—प्रतापशाली और सत्त्वगुण प्रधान ये दो गु
अधिक हैं। ढुंढिराज—शूर, गंभीर, चतुर, अवयव सुडौल होना, ऊंचा
कम। कल्याणवर्मा—बुद्धिमानों में श्रेष्ठ, चंचल और सुंदर आंखें
प्रचंड, स्थिर पाव, हाथ मोटे। श्रीनिवासशर्मा—कम बोलना।

सबके मत एक करके कहें तो—लाल आंखें– (युरोपियन अथव
चित्पावन ब्राह्मणों जैसी) यह अनुभव किस राशि में आता है य
कहा नहीं है। मेरे मत से केवल अकेले रवि से ऐसी आंखें नहीं ह
सकती। उसके लिए मंगल का कोई संबंध होना चाहिए। लग्न 
मेष, सिंह अथवा वृश्चिक इन राशियों में रवि हो तो यह अनुभव आत
है। ऐसा न होकर सिर्फ रवि लग्न में हो तो आंखें बारीक, काली
तेजस्वी, अति चंचल और रुआबदार होती हैं। वृषभ और धनु में रवि
हो तो आंखें बड़ी; आकर्षक, हरिणी के समान शांत व निष्पाप होती
हैं। मिथुन, तुला व कुंभ में रवि हो तो लोगों पर प्रभाव डालनेवाली
तेजस्वी नजर होती है तथा आंखों की पुतली काली और उभरी हुई

होती है। कर्क, कन्या, मकर और मीन राशि में रवि हो तो शांत, स्थिर और भेदक नजर तथा पुतली धंसी हुई दिखती हैं। चौकोर शरीर–सूर्य का बिंब गोल होते हुए शास्त्रकार चौकोर कहें यह बडे आश्चर्य की बात है। किंतु अनुभव ऐसा है कि राशि के १५–१५ अंशों के दो विभाग करके रवि किस विभाग में है यह देखकर निश्चित करना होता है वह निम्न प्रकार है—

**चौकोर**—मेष, सिंह, धनु के उत्तरार्ध में। वृषभ, कन्या, मकर के पूर्वार्ध में। मिथुन, तुला, कुंभ के उत्तरार्ध में। कर्क, वृश्चिक, मीन के पूर्वार्ध में। इनमें रवि हो तो वह मनुष्य गिड्डा और चौकोर आकार का होता है। और अन्य भाग में हो तो ऊंचा, पतले कद का, लंबे चेहरे का होता है। लग्न में भी यही अनुभव आता है। इसमें थोडा फरक होने की संभावना है। वह यह कि समाज में हमेशा एक अनुभव आता है कि कन्या के उत्तरार्ध में ऊंचा, पतला और नाक उभरी हुई होती है। उस समय लगता है कि इसका लग्न तुला होगा। धनु के उत्तरार्ध में जन्म हो तो चौकोर चेहरा और कंधे सुंदर होते हैं। मकर का पूर्वार्ध भी ऐसा ही होता है। इसलिए कुंडली देखने वाले को हमेशा धनु या मकर यही संशय होता है। एक ज्योतिषी को कुंडली बताई तो वह धनु बतलाता है तो दूसरा ज्योतिषी मकर बतलाता हैं। किंतु ऊपर का कारण मालूम न होने से विवाद का मौका आता है।

**पित्तप्रकृति**—रवि मूल में रूखा और उष्ण होने से शरीर रूखा और उष्ण होकर पित्त की अधिकता होना स्वाभाविक है। फिर भी यह मेष, सिंह और धनु में अधिक होता है। मिथुन, तुला, कुंभ में कम और दूसरी स्त्री राशियों में तो बिल्कुल कम होता है।

**कम बाल** - रवि को मूल में बाल ही नहीं हैं। किंतु सिंह, धनु, मीन राशि में वह हो और लग्न में हो तो बाल घने होते हैं। दूसरी राशियों में कम होते हैं। स्त्रियों के रवि पुरुष राशि में हो तो बाल घने, लम्बे, काले और बहुत होते हैं—वेणी नितम्ब तक पहुंचती है। स्त्री राशि में हो तो छोटे, चमकदार, कम लंबे और लहरीले होते हैं।

**सत्त्वगुण प्रधान**—रवि को सत्वगुणी माना है। परंतु अनुभव से वह रजोगुणी सिद्ध होता है क्योंकि कुंडली के बारहों स्थानों में उसके मारक गुणधर्म दिखाई देते हैं। इसलिए इसे रजोगुणी मानना चाहिए।

**गंभीर**—रवि के अमल वाले पुरुष में स्वाभाविक तौर पर बडप्पन की भावना और अभिमान की वृत्ति होने से वे गंभीर होते हैं।

**चतुर**—शिक्षा कम हुई तो भी बुद्धिमान और समय पर योग्य जवाब देकर वख्त निभा लेते हैं।

**सुरूप-सुवृत्त गात्र**—सुंदर, सुडौल शरीर होता है।

**मेरे मत से**—रवि पुरुष राशि में हो तो वे लोग सुंदर न होकर रुखे, बलवान, सहनशील और मजबूत होते हैं। सुडौल नहीं होते। रवि स्त्री राशि में हो तो पतले, सुंदर, सुडौल होते हैं।

**श्यामारुणांग**—पुरुष राशि में अधगोरे रंग के और स्त्री राशि में गोरे और सुंदर होते हैं।

**चल**—रवि, मेष, कर्क, तुला, मकर और धनु इन राशियों में हो तो वे पुरुष हमेशा घूमते रहते हैं। उनको घूमना बहुत प्रिय होता है। घर में भी इधर उधर टहलते रहते हैं। अन्य राशियों में स्थिर होते हैं। रवि उदय होने से सारे आकाश में घूमकर संध्या के

समय अस्त होता है। दूसरे दिन भी उसका यही क्रम होता है। इसी पर से उसे चल माना होगा। इसी प्रकार सूर्य स्थिर है और पृथ्वी घूमती है इस परसे उसको स्थिर मानने की कल्पना भी स्वाभाविक होती है। इसी कल्पना परसे रवि के अमल में मनुष्य स्थिर होते हैं ऐसा कहा है।

**चारुनयन**—सुबह का सूर्य बहुत तेजस्वी, सुंदर और मनोहर प्रतीत होता है। इसलिए सुंदर आंखों का कहा होगा। किंतु रवि कहां होना चाहिए यह नहीं बताया हैं। अनुभव से मालूम होता है कि दूसरे, सातवें और बारहवें स्थान में हो तो यह अनुभव अधिक आता है; अन्य स्थानों में नहीं।

**प्रचंड**—इसका अर्थ समझ में नहीं आता। प्रचंड शरीर से, ज्ञानसे कि पराक्रम से? तीनों अर्थ लिए तो ऐसे विभाग होते हैं। धन, षष्ठ और सातवें स्थान में रवि हो तो शरीर से प्रचंड; धन, पंचम और भाग्य में हो तो ज्ञान से प्रचंड और तीसरे, दसवें और बारहवें स्थान में हो तो पराक्रमसे प्रचंड होता है।

---

# प्रकरण ६ वाँ

## द्वादश भाव विवेचन

प्राचीन ग्रंथकारोंने एक ही ग्रह के स्थान के अलग अलग फल दिये हैं। ये फल परस्पर विरोधी भी हैं जिससे सामान्य वाचक सारे फलज्योतिष को ही झूट समझने लगता है। और तो क्या ज्योतिषियों को भी शंका होती है : प्राचीन लेखकोंने इस विरोध का स्पष्टीकरण नहीं दिया है जिससे संभ्रम पैदा होता है। इसलिए यद्यपि प्राचीन ग्रंथ ज्ञानपूर्ण और उत्तम हैं तथा उनके अभ्यास से निर्दोष फल

बताना संभव है फिर भी सामान्य पाठक इनके अभ्यास को छोडकर पश्चिमी ग्रंथोंकी ओर झुकते हैं। इस अंग्रेजी वाङ्मय में भी जो फल दिये हैं वे उसी प्रकार संदिग्ध और गोलमेल हैं। पाठकों का यह संकट अंशतः दूर करना मेरा प्रधान उद्देश्य है।

प्राचीन ग्रंथकारोंने दो बातों का स्पष्टीकरण नहीं किया है। एक तो यह कि हरेक ग्रह में तारक और मारक ये दोनों शक्तियाँ हैं। दूसरे, एक ही ग्रह स्त्री और पुरुष राशि के भेद से भिन्न फल देता है। पहली बात के उदाहरण के लिए—गुरु ज्ञान से भिन्न दूसरी बातों में बुरे फल देता है। वह ज्ञान देता है किन्तु संपत्ति का नाश भी कर सकता है। किंतु शास्त्रकारोंने गुरु को संपत्ति का कारक कहा है जिससे गुरु बुरे फल देता ही नहीं ऐसी धारणा हो गई है। इसलिए शास्त्रमें इसके शुभ फल कहे हैं फिर भी अनुभव उल्टा आता है। दूसरी बात का खुलासा इस प्रकार है। रवि, मंगल, शनि और राहु ये पापग्रह स्त्री राशियों में अच्छे फल देते हैं और पुरुष राशियों में अशुभ। गुरु, शुक्र, चंद्र और बुध ये शुभ ग्रह स्त्री राशियों में अशुभ होते हैं और पुरुष राशियों में अच्छे फल देते हैं। रवि, चंद्र, गुरु और शुक्र जिस स्थान में हो उसका नाश करते हैं। गुरु दशम में हो तो पिता का सौख्य नहीं मिलता। वही शनि दशम में हो तो पिता का सुख पूरा देकर माता का सुख नष्ट करता है।

## लग्न का रवि

वैद्यनाथ मार्तण्डो यदि लग्नगोऽल्पतनयो जातः सुखी निर्घृणः।
स्वल्पाशी विकलेक्षणो रणतलश्लाघी सुशीलो नटः॥
ज्ञानाचारतः सुलोचनयशः स्वातंत्रिकोच्चंगते।
मीने स्त्रीजनसेवितो हरिगते राड्यंधको वीर्यवान्॥

( रवि लग्न में हो तो संतति कम होती है। जन्म से ही सुखी, निर्दय, कम खानेवाला, बार बार अस्वस्थता पैदा होनेवाला, युद्धमें आगे रहनेवाला, शीलवान, नट, ज्ञान और आचरण में मग्न, सुहावनी आँखों का, सब कार्यों में यशस्वी और स्वतंत्रतासे ऊंची जगह पानेवाला होता है। मीन में रवि हो तो बहुतसी स्त्रियों से संबंध होता है। सिंह में हो तो रात को दिखता नहीं है। यहां लग्न स्थान को संतति दर्शक मानकर कम संतति ऐसा जो फल दिया है वह रवि पुरुष राशि में हो तो मिलता है। स्त्री राशि में हो तो संतति अच्छी संख्या में होती है। स्त्री राशि में हो तो सुखी होता है किंतु पुरुष राशि में हो तो सदा कोई न कोई दुख पीछे लगा रहता है। या तो संतति का अभाव होता है या शारीरिक कष्ट होते हैं। कम खाने वाला यह फल स्त्री राशि का है। पुरुष राशि में खाने की बहुत इच्छा होती है। विकलेक्षण यह फल मेष, सिंह और धनु इन राशियों में विशेष कर मिलता है। युद्ध में अग्रसर और सुशील ये फल भी इन्हीं राशियों में विशेष मिलते हैं। मिथुन, कर्क, सिंह, तुला, धनु, मकर, कुंभ, मीन, इन राशियों में नट होना संभव है। ज्ञानाचाररत यह फल कर्क, वृश्चिक, धनु और मीन में देखा जाता है। स्त्री राशि में सुलोचन यह फल देखा गया है। मेष, कर्क, सिंह, वृश्चिक, धनु इनमें तो कीर्ति मिलती है, दूसरी राशियों में नहीं। स्वतंत्रता से ऊंची जगह पाना यह फल कर्क, वृश्चिक व मीन में अधिकता से, मेष, मिथुन, सिंह, तुला, धनु, कुंभ इनमें साधारण तौर पर और वृषभ, कन्या तथा मकर में बहुत ही कम देखा गया है। पुरुष राशि में हो तो आरंभ से ही स्वतंत्र रहता है। स्त्री राशि में हो तो पहले नौकरी करके बाद में स्वतंत्र होता है। मीन में रवि अकेला हो तो अनेक स्त्रियों का उपभोग नहीं होता, उसके साथ शुक्र हो तो

होता है। सिंह में रवि हो तो रात को नहीं दिखता यह फल समझ में नहीं आता। वस्तुतः सिंह राशि रात को ही बलवान होती है और सिंह को भी रात में ही अच्छा दिखाई देता है। मैंने जो दो उदाहरण देखे उनमें एक में व्ययस्थान में कन्या का रवि शनि से दृष्ट था और दूसरे में मीन का रवि धन स्थान में और अष्टम में चंद्र तथा पंचम में शनि था। यह अनुभव शास्त्रकारों से भिन्न है। वीर्यवान का मतलब पराक्रमी या स्त्री उपभोग की विशेष इच्छा रखनेवाला यह हो सकता है। पहला फल अपने अपने व्यवसाय के अनुसार होता है। जैसे लडाकू आदमी हो तो युद्ध में शौर्य बतलाता है। मध्यम वर्ग का हो तो निजी उद्योग में फायदा होता है। निचले वर्ग में नौकरी में तरक्की मिलती है। रवि स्वभावतः उष्ण होने से कामवासना अधिक होना स्वाभाविक है। मेष, सिंह और धनु में रवि हो तो दिनमें भी कामेच्छा होती है इतनी प्रबल वासना होती है। मिथुन, तुला, कुंभ में साधारण तथा अन्य राशियों में यह फल कम मिलता है।

**आर्यग्रन्थकारः**

**सवितरि तनुसंस्थे शैशवे व्याधियुक्तो**
**नयनगदसुदुःखी नीचसेवानुरक्तः।**
**न भवति गृहमेधी दैवयुक्तो मनुष्यो**
**भ्रमति विकलमूर्तिः पुत्रपौत्रैर्विहीनः॥**

बाल वय में रोग होते हैं। आंखों के विकार होते हैं। नीच लोगों की नौकरी करना है। दैवयोग से स्त्रीपुत्र नहीं होते। एक जगह घर बसा कर नहीं रहता। हमेशा भटकता रहता है। इनमें शैशव में व्याधि यह फल मेष, सिंह व धनु में ठीक उतरता है। इनमें शीतला, टाइफाइड इत्यादि रोग होते हैं। वृषभ, कन्या और मकर में सरदी, आँख के रोग ये विकार होते हैं। मिथुन, तुला और कुंभ में मलेरिया,

सूखी और भूतबाधा संभव है। कर्क, वृश्चिक और मीन में प्रदर, खांसी, संग्रहणी ये विकार होते हैं। १८ वें वर्ष तक प्रकृति मामूली रहती है फिर कुछ सुधार होता है। नीचों की सेवा यह फल वृषभ, कन्या व मकर में मिलता है। घर गृहस्थी नहीं होना और भटकते रहना ये फल लग्न के रवि में बिलकुल नहीं होते।

**हिल्लाजातककार:**—लग्नजे दिनकरस्तुपीडां वत्सरे तिथिमिते च करोति। रवि लग्न में हो तो १९ वें वर्ष में शरीर को कष्ट होते हैं। इसकी उपपत्ति नहीं बैठती। १९ वां वर्ष तृतीय स्थान का है। यह स्थान संकट दूर करता है। फिर इसी का वर्ष कष्टदायक होगा यह कहना कठिन है। रवि के स्वभावत: वर्ष १ और १३ हैं उनमें शरीर को कष्ट होते ही हैं। साधारण तौर पर १८ वें वर्ष तक पीडा यह लग्नस्थ रवि का फल है।

**यवनमत:**—अशक्त, स्त्रियों से दूषित, बागबगीचों का शौकीन, किंतु तुला में नीच का रवि हो तो मानहानि, अविचारी, ईर्षालु, बचपन में दुर्बल, ये फल होते हैं। मेरे मत से कठोर बर्ताव के कारण स्त्रियां अप्रसन्न होती हैं। खासकर तुला और धनु लग्न में रवि हो तो वह पुरुष स्त्री को अच्छी तरह नहीं सम्हाल सकता। बगीचों के बारे में कोई अनुभव नहीं मिला है। अविचारी और ईर्षालु ये फल तुला राशि में देखे गये हैं, अन्य में नहीं।

**अज्ञात ग्रन्थकार**—रवि लग्न में हो तो आत्मविश्वासी, दृढनिश्चयी, उदार, ऊंचा, ऊंचे विचारों का, स्वाभिमानी उदार हृदय का, हल्के कामों का तिरस्कार करने वाला, कठोर, न्यायी और प्रामाणिक होता है। अग्नि राशि में रवि हो तो महत्वाकांक्षी, जल्दी क्रुद्ध होने वाला, सब पर अधिकार जमाने की इच्छा रखने वाला, गंभीर और कम

बोलने वाला होता है। रवि पृथ्वी राशि में हो तो घमंडी, दुराग्रही, सनकी होता है। वायु राशि में हो तो न्यायी, अच्छे दिल का, कला-कौशल और शास्त्रीय विषयों में रुचि रखने वाला होता है। जल राशि में हो तो स्त्रियों में अधिक आसक्त होता है जिससे अपने नाश का भी विचार भूल जाता है। कर्क राशि में अपनी घरगृहस्थी में मग्न, दयालु होता है। वृश्चिक में अच्छा डॉक्टर या दवाई बनाने वाला होता है और जगत में विख्यात होता है। साधारण तौर पर लग्न का रवि प्रगति व भाग्योदय का पोषक होता है।

राफेल—इसने पृथ्वी राशि के जो फल दिये हैं वे मेष सिंह और धनु में मिलते हैं। अग्नि राशि के फल मिथुन तुला, कुंभ में मिलते हैं। वायु राशि के फल उन्हीं में मिलते हैं। जलराशि में विषयासक्ति ऐसा फल दिया है वह पुरुष राशि में ही अनुभव में आता है। अपने से भिन्न लिंग के व्यक्ति के प्रति आकर्षण यह फल मेष, सिंह, धनु इनमें अधिक; मिथुन, तुला, कुंभ में साधारण; वृषभ, कन्या, मकर में कम और कर्क, वृश्चिक और मीन में सबसे कम मिलता है। स्त्री का स्त्रीलग्न हो तो वह पुरुषसौख्य के बारे में आसक्त होती है। और पुरुषलग्न का पुरुष स्त्रीसौख्य में आसक्त होता है। पुरुष लग्न की स्त्रियां उपभोग का आनंद अच्छी तरह नहीं जानती। स्त्री लग्न के पुरुष सच्ची तौरपर स्त्री का उपभोग नहीं कर पाते हैं। फिर भी जगत में स्त्रीलग्न के ही पुरुषों को स्त्रिया अधिक चाहती हैं और वे ही सुखी होते हैं उनमें भी वृषभ, कन्या और मकर लग्न के लोग अधिक होते हैं। कर्क, वृषभ और मीन के बहुत कम या नहीं ही होते हैं यह आश्चर्य की बात है। वृषभ का रवि लग्न में हो तो वह डाक्टर या केमिस्ट बनता है अथवा विख्यात मेकॅनिकल इंजीनियर,

नाविक या बी. एस्‌सी, डी. एस्‌सी आदि उपाधिधारी शास्त्रज्ञ होता है। आम तौर पर पश्चिमी लोगों ने लग्न के रवि के फल अच्छे ही माने हैं। उनको बुरे फलों का अनुभव नहीं हुआ होगा। किंतु हमारे प्राचीन ग्रंथों में दोनों फल दिये हैं जिससे साबित होता है कि पश्चिमी लोगों की अपेक्षा हमारा संशोधन अधिक प्रगत है।

**मेरा अनुभव**—संक्षेप में कहा जाय तो लग्न में स्त्री राशि का रवि संसार में सुख देता है और पुरुष राशि का थोडा दुःखदायक होता है। धनु राशि में विद्वान, कायदेकानून में प्रवीण, अच्छा नट, बैरिस्टर, हायकोर्ट जज वगैरह ऊंची जगहों पर रहता है किंतु साथ में स्त्रीसुख नहीं होना, अनेक स्त्रियाँ होना, संतति नहीं होना, ऐसा कोई दुःख होता ही है। कर्क राशि में सामान्यतः धनवान, स्त्रीसौख्य से संपन्न, संतति भी होती है किंतु जगत् में मान कम होता है। अधिकार कम होता है। ऐसे दुःखी भी होते हैं। खास कर दक्षिणायन का याने कर्क से धनु तक का रवि मनुष्य को भाग्यशाली बनाता है। इन राशियों में वह विश्व का विकास करता है। उत्तरायण का रवि लडाई झगडे और अपना हक जमाने की प्रवृत्ति को बढाता है। दक्षिणायन में इसके विपरीत दैवी वृत्तियां बढती हैं। सामान्य तौर पर लग्न का रवि मनुष्य की उन्नति करता है क्यों कि वह स्वयं ऊंचे दशम स्थान की ओर बढा हुआ होता है।

## धनस्थान का रवि

**वैद्यनाथ**—त्यागी धातुर्द्रव्यवान् इष्टशत्रुर्वाग्मी वित्तस्थानगे चित्रभानौ। रवि धनस्थान में हो तो वह मनुष्य त्यागी, मूल्यवान धातु और पैसेवाला तथा शत्रुओं को अनुकूल कर लेने वाला होता है। इन में त्याग यह फल मेष, सिंह और धनु राशि में ठीक उतरता है। जिन

का लग्न मकर, कन्या, वृषभ या वृश्चिक हो उनको रवि यदि धनस्थान का हो तो मूल्यवान धातु और नगदी पैसे प्राप्त होते हैं। स्त्रीलग्न हो तो इष्टशत्रु और वाग्मी यह फल अनुभव में आता है।

**आर्यग्रंथकार— धनगतदिननाथे पुत्रदारैर्विहीनः कृशतनुरतिहीनो रक्तनेत्रः कुकेशः। भवति च धनयुक्तो लोहताम्रेण सत्यं न भवति गृहमेधी मानवो दुःखभागी॥**

इनका स्त्रीपुत्रों से हीन यह फल धनस्थान में मिथुन, धनु और मीन राशि का रवि हो तो मिलता है। शरीर कृश होना यह फल नहीं मिलता क्योंकि वह लग्न पर अवलंबित है। रतिहीन यह फल वृषभ, धनु और मिथुन (उत्तरार्ध) इन लग्नों के पुरुषों को ही मिलता है। रवि मेष, सिंह या धनु में हो तो आखें लाल होती हैं। किंतु चित्पावन ब्राह्मणों की आंखें जाति से ही लाल होती हैं इसलिए उन्हें धनस्थान का रवि होना आवश्यक नहीं। मैंने सिर्फ दो आदमी ऐसे देखे हैं जिन्हें सचमुच रक्तनेत्र कहा जा सके। इनकी आंखें अग्नि जैसी लाल और पुतलियां भी लाल थीं। इनमें से एकके धनु राशि में रवि मंगल की पूरी योगयुति और क्रान्तियुति थी और साथ में मूल नक्षत्र की भी युति थी तथा लग्न में वृश्चिक राशि में शनि और राहु थे। दूसरे उदाहरण में रवि मंगल और रोहिणी तारा की युति थी तथा लग्न में मेष के कृत्तिका नक्षत्र में राहु शनि की पूरी युति थी। इनसे कुछ नियम बनाना कठिन है। बुरे केश यह फल रवि का न होकर लग्नस्थान का है। तांबे और सोने से संपन्न यह फल पुरुष राशि में मिलता है, स्त्री राशि में नहीं। यह सत्य है कि यह फल मेष सिंह और धनु लग्न हो तो मिलता है। घरगृहस्थी न होकर मनुष्य दुखी होता है यह फल वृश्चिक, धनु, मकर या कुंभ लग्न हो तो ही मिलता है।

**हिल्लाजातककारः**—सप्तदशपरिमितेच वत्सरे यच्छति द्रविणगो धनहानिम् । धनस्थान का रवि आयु के १७ वें वर्ष में संपत्ति का नाश करता है। मेरे मत से धनस्थान का रवि १७ वें वर्ष में धन का नाश करता ही है ऐसा नहीं। २२ वें वर्ष तक पैतृक संपत्ति नष्ट होती है ऐसा अनुभव है। क्योंकि १७ वें वर्ष तक प्रायः खुदकी संपत्ति होती ही नहीं।

**यवनमतः**—धनस्थान का रवि हो तो वह मनुष्य बुद्धिहीन, क्रोधी, कंजूस, निर्धन, क्रूर, कुरूप, रोगी और गाफ़िल रहता है। इन में मेरे विचार से बुद्धिहीन और कंजूस ये फल मिथुन राशि में मिलते हैं। मेष और धनु राशि में क्रोधी होता है। वृश्चिक व धनु राशि में निर्धन होता है। क्रूर और कुरूप ये फल किसी राशि में नहीं मिलते। रोगी यह फल हर एक राशि में थोडा बहुत मिलता ही है। धनु लग्न हो तो ग़ाफिल रहने का फल मिलता है।

**राफेलः**—धनस्थान में रवि हो तो वह मनुष्य उदार, पैसा बहुत जल्दी खर्च करने वाला, बेफिक्र और संपत्ति खतम कर देने वाला होता है। ये फल मेरे मत से पुरुष राशि में रवि हो तो ही मिलते हैं अन्यथा नहीं।

**मेरा अनुभवः**—धनस्थान का रवि-वृषभ, कन्या या मकर राशि में हो तो आवाज कर्कश होती है और धन का संग्रह नहीं होता। इन्शुरन्स के रूप में पैसा इकट्ठा करना चाहे तो भी उसके प्रीमियम नहीं भर सकता जिससे पॉलिसी छोड देना पडता है। किसी का कर्ज चुकाने के लिए पैसे इकठे किये तो कोई तीसरा ही जबरन उसे ले जाता है। जब कि उनके वापस मिलने की कोई आशा नहीं होती फिर भी ऐसे समय खुद कर्ज़दार होकर भी दूसरे को कर्ज़ देना

पड़ता है। पैतृक संपत्ति होती ही नहीं और हुई भी तो मिलती नहीं। भाईबंद या ट्रस्टी ही गडप कर जाते हैं। फिर भी रही तो २८ वें वर्ष तक नष्ट होती है। तब तक उद्योग अच्छी तरह नहीं होता और यश नहीं मिलता। धंधे में नुकसान होकर कर्ज़ लेना पडता है। एक कर्ज़ चुकाने तक दूसरा तैयार हो जाता है। नौकरी सुहाती नहीं और स्वतंत्र धंधा करने की इच्छा होती है। धनेशं बलवान हो यानें वक्री, अस्तंगत, मंदगामी, अतिचारी या पापग्रह से युक्त न हो तो ही यह इच्छा पूरी होती है। कुटुंब के व्यक्ति इसके सामने ही मर जाते हैं। इसके जन्म से पिता का भाग्योदय हुआ तो आखिर तक वह पिता पर ही अवलंबित रहता है। स्वतंत्र नौकरी या धंधा नहीं कर पाता। अपनी कमाई पिता को नहीं देता और मन में कुढता रहता है। बाप की मृत्यु के बाद धन मिलता है या २२ वें वर्ष तक बाप की मृत्यु हो जाती है। पितापुत्र का सौमनस्य नहीं रहता। यूनिवर्सिटी की पढाई पूरी नहीं हुई तो भी बुद्धि का तेज दिखाई देता है। बोलना निर्भय और तीखा होता है जो ढोंगी समाजनेताओं को शल्क जैसा मालूम होता है। हरएक दिनके मामूली बोलचाल से गलतफहमी होती है। यह किसी की नहीं सुनता लेकिन संकट के वख्त आगे आकर सब को मदत पहुंचाता है। वकील और डाक्टर लोगों को यह योग अच्छा होता है। इसमें न थकते हुए श्रम कर सकता है, उकता नहीं जाता। डाक्टर हो तो समय पर रोगियों को ध्यान से देखता है। काम पडे तो अपने पैसे से दवाई करता है। ज्योतिषी हो तो उसके बताये अशुभ फल जलदी अनुभव में आते हैं, शुभ फल देरी से मिलते हैं।

धनस्थान में मिथुन, तुला या कुंभ का रवि हो तो खुद खूब पैसा कमाता है किंतु खर्च करने में कंजूस होता है। लोगों की सहानुभूति

प्राप्त नहीं करता। बुद्धि साधारण और पढाई कम होती है। दैवयोग से धन मिलता है। खुद उपभोग नहीं करते और न दूसरों को करने देते हैं। विज्ञान की शिक्षा अच्छी होती है, साहित्य की नहीं।

धनस्थान का रवि–कर्क, वृश्चिक और मीन राशि का हो तो अधिकारी और विद्याभ्यासी होता है। किसी फर्म में नोकरी कर अच्छा पैसा कमाता है। इसी स्थान में मेष, सिंह और धनु राशि का रवि हो तो वह मनुष्य खुद की ही अधिक फिक्र करता है, खुद के लिए चाहे जितना पैसा खर्च करता है, काम से बड़बड़ ही ज्यादा करता है और मुफ्त में बडप्पन पाना चाहता है। इसे नाम मिलाकर लाभ होने की संभावना हो तो किसी संस्था को दान देने का भी दिखावा करता है। पेपर में अपना नाम या चित्र प्रकाशित करने के लिए पैसे देकर या अन्य किसी भी मार्ग से संपादक की खुशामद करता है। किंतु अपना लाभ या कीर्ति न होती हो तो अनाथ और दीनों की ओर नजर भी नहीं डालता।

अब धनस्थान के रवि के सामान्य फल बताएंगे। इस मनुष्य को हमेशा उष्णता रहती है इससे आंख, हाथ के तलवे और पांव हमेश गरम होते रहते हैं। वृद्धावस्था में आंख कमजोर हो जाती है। अन्न के बारे में विशिष्ट रुचि होती है। विशिष्ट पदार्थ ही भाते हैं। कपडे लत्ते अधिक न होने पर भी रहने की जगह साफ सुथरी और अच्छी चाहिये। रात को २ के बाद काम वासना होती है। धनका संग्रह नहीं होता किंतु अन्नवस्त्र की कमी नहीं होती। वृश्चिक, धनु, मकर या कुंभ लग्न हो और धनस्थान का अधिपति गुरु या शनि वक्री हो और वे दूसरे, चौथे, छठवें, आठवें या बारहवें स्थान में हों और ऐसे योग में रवि धनस्थान में हो तो यह अत्यंत दारिद्र्य सूचक योग होता

है। ऐसे लोगों को आठ आठ दिन भूखे रहना पडता है। अन्न के लिए तडफडाते हैं। घरगृहस्थी नहीं होती। समयपर अन्न मिला भी तो तबियत ठीक नहीं रहती। अन्न पचता नहीं। तकलीफ़ होती है। स्त्रीपुत्र भी नहीं होते। जीवन में स्थिरता नहीं होती। किसी दूसरे के घर रहे तो उसे अपना घर समझ कर रहते हैं। इनको अपनी इच्छा के विरुद्ध खानपान करना पडता है। धन और मकर लग्न के लोगों को यह अनुभव विशेषता से आता है क्योंकि इनका धनेश शनि और गुरु होता है और शनि ही उपजीविका का कारक है। ऐसे लोगोंने पूर्व जन्म में दूसरों को ठगा कर हीन स्थिति में पहुंचाया होता है या दूसरों की रोजी छुडाकर उनको संकट में डाला होता है।

धनेश गुरु वक्री हो तो ये फल कुछ सौम्य होते हैं किंतु पूरी तौर पर नष्ट नहीं होते। धनस्थान के स्वामी और धनस्थान ये अन्न के कारक हैं इसलिए ये फल मिलते हैं। हमारी खुद की कुंडली में यह योग है। कई ज्योतिषियों ने मेरी कुंडली का विवेचन किया किंतु अन्न न मिलने का योग किसी ने नहीं बताया। मेरी कुंडली ऐसी है—
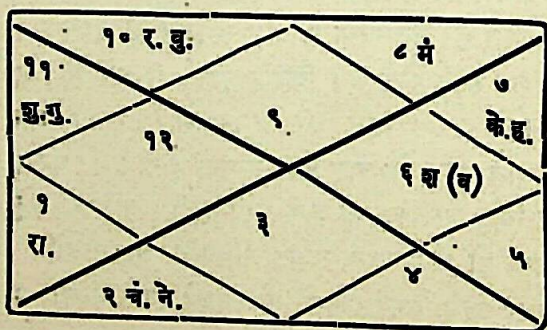
जन्म शक १८१३ माघ शुक्ल ७ सूर्योदय से इष्ट घटिका ५६ ता. ६–२–१८९२। जन्म समय ४ से ४–१० तक। धनु लग्न २५°। जन्मस्थान बेलगांव (अक्षांश १६–५० रेखांश ७४–५० पलभा ३–२४) मुझे अन्न नहीं मिलता। अन्न के लिए तड़पना पडता है। घरगृहस्थी नहीं। दूसरों के ही घर रहना पडता है। किंतु जहां रहा वहां किसी प्रकार की अपकीर्ति नहीं हुई। गुरुवर कै० नवाथेजी की कुंडली में कुंभ लग्न है और धनस्थान में स्वगृह का गुरु वक्री है। उनकी स्थिति भी मेरी जैसी ही थी। सिर्फ अन्न की कमी नहीं थी। ता. ४–८–१९३५ के भविष्यदीप पत्र में मैंने ऐसी ही एक कुंडली प्रकाशित की थी। इसमें मकर लग्न था और धनेश शनि वक्री था। वह आदमी चित्पावन ब्राम्हण था। बूढा, दाढीवाला, कुछ छोटी कद का, मुंह पर शीतलाके दाग और शरीर पर मैले कुचैले कपडे ऐसे वेष में बम्बई के फूट पाथ पर निर्णयसागर का पंचांग बेचते फिरता था। बाद में वह नर्मदा की परिक्रमा करने गया। उसकी शादी नहीं हुई थी। उसको दो दिन में एक बार खाने को मिलता था। बम्बई में रहता था तब मैं स्वयं उसे दो दिनके बाद खाने के लिए अठन्नी देता था। किंतु ऐसी स्थिति में भी उसकी वृत्ति अभिमानी थी। भीख मांगूं लेकिन आजाद रहूं ऐसी वृत्ति थी किंतु दैव सीधा नहीं था। ऐसे लोग बोलने में तीखे और सत्य के लिए चाहे जितने भी संकट झेलने वाले होते हैं।

## तृतीय स्थान का रवि

वैद्यनाथः—शूरो दुर्जनसेवितोऽतिधनवान् त्यागी तृतीये रवौ। पराक्रमी, दुर्जनों से सेवा ग्रहण करनेवाला, धनवान और त्यागी होता है।

आर्यग्रंथकार—सहजभुवनसंस्थे भास्करे भ्रातृनाशः प्रियजनहितकारी पुत्रदाराभियुक्तः। भवतिच धनयुक्तो धैर्ययुक्तः सहिष्णुः विपुलधनविहारी नागरी प्रीतिकारी॥ बंधुओं का नाशक, प्रियजनों का हित करने वाला, स्त्रीपुत्रों से संपन्न, धनवान, धैर्यवान, दूसरों का उत्कर्ष सहनेवाला, बहुत पैसा खर्च करने वाला होता है।

हिल्लाजातककार—वत्सरे नखमिते तृतीयकः स्थानगो दिनकरोर्थलाभदः। यह रवि आयु के २० वें वर्ष में धनलाभ करता है।

बृहत्पाराशरीकार—अग्रे जातं रविर्हन्ति। यह रवि बडे भाई का नाश करता है।

यवनमत—यह पदवीधर, ख्यातनाम, नीरोग, मीठा बोलनेवाला, सुंदर स्त्रियों का भोक्ता, विलासी, चैनी, घोडे की सवारी में कुशल, निश्चयी, धनवान और शांत होता है। वृत्ति बहुत गंभीर होती है। भाईबंधुओं का सौख्य इसको नहीं मिलता किंतु यह सबको सुख देने का प्रयत्न करता है।

राफेल—स्थिर और निश्चयी, विज्ञान और कला का प्रेमी, निवासस्थान क्वचित ही बदलनेवाला। जल या चर राशि में बहुत से छोटे प्रवास हो सकते हैं।

सब शास्त्रकारों के मन से यह रवि शुभ फल ही देता है। बुद्धिवान, धनवान, धैर्यवान, पराक्रमी, वाहनसंपन्न, पुत्रोंसे युक्त, ख्यातिप्राप्त, राजसन्मानित; युद्ध में शत्रु का नाशक, भाईबहिन को सुख न देने वाला, भाई भाई एक जगह रहते हों तो कष्ट देने वाला, ऐसे फल सबने एक मतसे बताये हैं। इनमें संतति, संपत्ति, वाहन और त्याग ये फल स्त्री राशियों में मिलते हैं। शेष फल पुरुष राशियों मे (मेष

छोडकर ) मिलते हैं। हिल्लाजातककार का २० वें वर्ष में धनलाभ का फल स्त्री राशि में और निचले वर्ग के लोगों में देखा जाता है। उच्च वर्ग में नहीं। क्योंकि हाल में ३६ वें वर्ष तक धनलाभ नहीं होता।

वृहत्पाराशरीकार का फल पुरुष राशि का है।

यवनमत में धनवान और शांत वृत्ति ये फल स्त्री राशि के हैं। शेष पुरुष राशि के हैं।

राफेल द्वारा दिये हुये फल पुरुष राशि के ही हैं।

**मेरा अनुभव**—तृतीय स्थान में मेष राशि का रवि हो तो दुर्बल विचारों का, आलसी, शरीर को कष्ट न देने वाला, बातें बनाने वाला, बडे भाई को मारक, निरुद्यमी और उपद्रवकारी होता है। अन्य पुरुष राशियों में हो तो शांत, विचारशील, बुद्धिमान, सामाजिक और शिक्षा-संबंधी तथा राजकीय कार्य में भाग लेने वाले, नेता, स्थानिक स्वराज्य संस्था जैसे लोकल बोर्ड, डिस्ट्रिक्ट बोर्ड, म्युनिसिपालिटी तथा असेंब्ली, कौन्सिल आदि में चुनाव, अध्यक्ष या उपाध्यक्ष का पद, बडी कंपनियों के डायरेक्टर इस प्रकार किसी भी जगह अपनी सत्ता रखने वाले होते हैं। जबान में अधिकार होता है। नीचे के लोग प्रेम से काम करते हैं। मिथुन, तुला या धनु में रवि हो तो लेखक, प्रकाशक, प्रोफेसर, वकील इन व्यवसायों में आगे आते हैं।

पंजाब के लाला गंगाराम ने अपनी सब इस्टेट विधवा स्त्रियों की उन्नत्ति के लिए दे दी। इनकी कुंडली में कन्या का रवि था। नागपुर विश्वविद्यालय को जिनने एकमुश्त चालीस लाख का दान दिया उन रायबहादुर डी. लक्ष्मीनारायण की कुंडली में मकर का रवि तृतीय स्थान में था। अन्नमलाई यूनिवर्सिटी के संस्थापक और लाखों रुपयों के दाता मद्रास के राजा अन्नमलाई की पत्रिका में वृषभ का रवि था।

इस प्रकार स्त्रीराशि के रवि के फल संपत्ति की दृष्टि से अच्छे मिलते हैं धनवाहन से संपन्न होता है।

पुरुष राशि का रवि बडे भाई को मारक होता है। या तो २२ वें वर्ष तक उसकी मृत्यु होती है या वह विभक्त होता है। विभाजन के समय झगडा फिसाद नहीं करता। एक जगह ही रहें तो बडे भाई का धंधा ठीक नहीं चलता। बच्चे ज्यादा दिन नहीं जीते। और भी तकलीफ होती है। स्त्री राशि का रवि हो तो विभाजन के समय कोर्ट में झगडे चलते हैं। अलग नहीं हुए तो घर का काम खुद चलाना पडता है। कर्ता का मान मिलता है। जिसके तृतीय में रवि हो उसने भाई के पास नहीं रहना चाहिये क्योंकि इससे एक दूसरे के भाग्योदय में विघ्न उपस्थित होता है। तृतीयस्थान में पुरुष राशि का रवि हो तो पिता को वह अकेला ही बच्चा होता है। भाई रहे भी तो उनसे मदत नहीं होती। सबसे छोटा हो तो भाई बहिनों से अच्छा बर्ताव नहीं रखता। या तो यह सबसे बडा होता है या सबसे छोटा। स्त्री राशि का रवि हो तो भाईबहिन हो सकते हैं।

## चतुर्थ स्थान का रवि

वैद्यनाथः—हृद्रोगी धनधान्यबुद्धिरहितः क्रूरः सुखस्थे रवौ। हृदय का विकार होता है, धनधान्य और बुद्धि नहीं होती, क्रूर होता है।

आर्यग्रन्थकारः—विविधजनविहारी बन्धुसंस्थो दिनेशो भवति च मृदुवेत्ता गीतवाद्यानुरक्तः। समशिरसि युद्धे नास्ति भंगः कदाचित् प्रचुरधनकलत्री पार्थिवानां प्रियश्च॥

हिल्लाजातककार – तुर्यग कलहो दिननाथो वत्सरेऽपि चतुर्दशे स्यात्। यह रवि आयु के १४ वें वर्ष में घर में झगडा उत्पन्न करता है।

**यवनमत**—यह सुख नहीं देता। संशयी, मुरझाये चेहरे का वेश्यासेवी और शत्रुयुक्त होता है। पागल जैसी मंद बुद्धि होती है।

**राफेल**—रवि बलवान या शुभ ग्रहों से दृष्ट हो तो अच्छी स्थिति प्राप्त होती है। आयुके अंतिम भाग में यश की प्राप्ति होती है। पिता को भी सुख देता है।

**मेरे विचार**—आर्यग्रंथकार के सिवा अन्य सब प्राचीन ग्रंथकारोंने इसके फल बुरे बताये हैं। सुख नहीं, हृदय को पीडा, वाहनों का सुख नहीं, भाईबंदोंका सुख नहीं, पिता का, घर का और धनका नाश, बुद्धिहीन, क्रूर, युद्धसे भागने वाला, बहुत पत्नियां होने वाला, पिता का वैरी, घर में झगडा करने वाला, दुष्टों के कारण मानसिक चिंता का शिकार होने वाला, चंचल विचारों का, लोगों पर प्रभाव न डालनेवाला ये सब फल यदि रवि, वृषभ, सिंह, वृश्चिक या कुंभ में हो तो ही मिलते हैं। मेष और कर्क में हो तो संशयी, म्लान चेहरे का और वेश्यासेवी ये फल मिलते हैं।

**हिल्लाजातककार का मत**—बच्चेकी पत्रिका में चौथे स्थान में रवि हो तो वह १४ वें वर्ष घर में कलह पैदा करता है यह फल समझ में नहीं आता। इस छोटे वय में वह खुद इस्टेट के लिए झगडे यह संभव मालूम नहीं होता। इसके पिता और चाचा में झगडा हो सकता है किंतु इसको चाचा ही नहीं हों तो वह फल कैसे मिलेगा? इसल्लिए इस फल का विचार नहीं कर सकते। आर्यग्रंथकार के फल मिथुन, कन्या, तुला, धनु, मकर और मीन में रवि हो तो मिलते हैं। यहां एक बात ध्यान में रखनी चाहिये कि रवि के ये सब फल एक ही व्यक्ति को एक ही जगह मिलें ऐसा नियम नहीं है। उदाहरण के लिए, किसी का चतुर्थ का रवि मेष में है। इसका पिता ९ वें वर्ष में ही

मरा। आगे कुछ दुःख नहीं रहा। बचपन में दूसरों के यहां रहा। २३ वें वर्ष में पदवीधर हुआ। २४ वें वर्ष में मा मर गई। उसके बाद उद्योग में लगा। अब संतति, संपत्ति, स्त्री, नौकर चाकर आदि से संपन्न है। इसकी पैतृक संपत्ति पहले ही नष्ट हो चुकी थी। इसके पैसे का उपभोग मां बाप नहीं कर सके।

**मेरा अनुभव**—पीछे एक जगह कहा है कि रवि जिस स्थान में होता है उसका फल नष्ट करता है। इसके अनुसार चौथे स्थान में रवि हो तो बचपन में माता या पिता का मृत्यु होता है। घरगृहस्थी उजड जाती है। बचपन बहुत तकलीफ का होता है। किंतु २८ वें वर्ष से ९० वें वर्ष तक बहुत अच्छी स्थिति रहती है। इस समय खुद के पैसों से घर और इस्टेट होती है। स्त्री एक ही और संतति भी अधिक नहीं होती। नौकरी करता है। आयु के मझले भाग में वाहन सौख्य अच्छा मिलता है। किंतु उत्तरार्ध में फिर दुख होता है। घर में कोई मानता नहीं। सब विरोध में हो जाते हैं। यह लोगों की झंझटों से बिलकुल दूर रहता है। मरण शांति से और जलदी होता है। यह अत्यंत व्यावहारिक होता है। वेदान्त इसको प्रिय नहीं होता। व्यापारी वर्ग जैसे गुजराती, मारवाडी, वैश्य, जैन आदि के लोग २२ वें वर्ष से धंधा शुरू करते हैं। उसमें अच्छी प्रगति करते हैं। आयु के ४८ से ९२ वें वर्ष तक स्त्री की मृत्यु होती है। प्राचीन शास्त्रकारोंने जो फल दिये हैं वे अकेले रवि के नहीं हैं। उसके साथ मंगल, शनि, राहु इन पाप ग्रहों का संबंध हो तो वे मिलते हैं। ऐसा नहीं हो तो कम मिलते हैं

**राफेल का मत**—सिर्फ तुला के रवि में अनुभव में आता है। सामान्य तौरपर यह रवि पूर्व आयुष्य में दुःखदायक, मध्यभाग में सुखकारी और वृद्धावस्था में दुःखदायक होता है ऐसा प्रतीत होता है।

## पंचम स्थान का रवि

**वैद्यनाथः**—राजप्रियश्चंचलबुद्धियुक्त प्रवासशीलः सुतगे दिनेशे। चंचल बुद्धि का, अधिकारियों को प्रिय और प्रवास करने वाला होता है।

**हिल्लाजातककारः**—पंचमो दिनपतिःपितृमृत्युर्वत्सरे नवमके। यह रवि ९ वें वर्ष में पिता का मृत्यु कराता है।

**आर्यग्रन्थकारः**—तनयगतदिनेशे शैशवे दुःखभागी न भवति धनभागी यौवने व्याधियुक्तः । जनयति सुतमेकं चान्य-गेहश्च शूरश्चपलमति विलासी क्रूरकर्मा कुचेता ॥बचपन में दुख देता है। पैतृक संपत्ति का नाश करता है। जवानी में रोग होते हैं। एक ही पुत्र होता है। दूसरे के घर में रहना पडता है। शूर, तीक्ष्ण बुद्धि का, विलासी होता है। बुरे कर्म करता है और बुरी सलाह देता है।

**यवनमतः**—मानहीन, संतति कम, मूर्ख, क्रोधी, नास्तिक और धार्मिक कार्यों में विघ्न करने वाला होता है।

**राफेल**—जलराशि से भिन्न राशियों में हो तो संतति नहीं होती। जलराशि में हो तो बच्चे कमजोर और बीमार होते हैं। चंद्र, गुरु या शुक्र वहां साथ में न हों या रवि पर उनकी दृष्टि न हो तो मर भी जाते हैं। विलास और स्त्रीसंग में खुश रहता है। पैसे बहुत खर्च करता है।

**मेरे विचार**—बहुतसे शास्त्रकारोंने अल्प संतति, संतति न होना या होकर मरना ये फल बताये हैं। ये फल रवि पुरुषराशि में हो तो मिलते हैं। संपत्ति का फल भी कुछ पुरुष राशियों में ही मिलता है। शारीरिक कष्ट और दुख यह फल कर्क, वृश्चिक और मीन इन राशियों में मिलता है। बुरी बुद्धि, बुरे कर्म, क्रोधी, कुरूप, कुशील,

कुसंगति इत्यादि फल वृषभ, कन्या मकर इन राशियों में मिलते हैं। हिल्लाजातककार का मत कैसा है इसका अनुभव पाठक देख सकते हैं। यवनमत मिथुन, तुला और कुंभ राशि के रवि में ठीक उतरता है।

**मेरा अनुभवः**—पंचम स्थान में मेष, सिंह, धनु इन राशियों में रवि हो तो शिक्षण सामान्यतया पूर्ण होता है। मेष में हो तो संतति बिलकुल नहीं होती। सिंह में हो तो संतति होती है लेकिन जलदी मर जाती है। रही भी तो उसका फायदा मां बाप को नहीं मिलता। मां बाप के बाद भाग्योदय होता है। शिक्षा कम किंतु व्यवहार में कुशल और ज्ञानवान होता है। रवि धनु में हो तो शिक्षा होती है। वकील, या सलाहकार, विलासी, चैनी, सुखी होता है। इन तीन राशियों में मुख्य फल तानाशाही है। वृषभ, कन्या, मकर, कर्क, वृश्चिक और मीन इन में स्वार्थपर, बहुत कंजूस, दूसरों के सुखदुख की ओर न देखनेवाला होता है। व्यापार में आगे बढते हैं। संतति होती है और रहती भी है। पैसा भी मिलता है। मिथुन, तुला और कुंभ में विद्याप्रेमी, लेखक, प्रकाशक, जज, बैरिस्टर, वकील ऐसे व्यवसाय होते हैं। इस स्थान का रवि किसी भी राशि में हो तो प्रसिद्धि देता है। शायद दो पत्नियां होती हैं। अधिकार की वृत्ति होती है। दूसरों के लिए कष्ट करता है। इसको संतति नहीं होती। पत्नी को संततिप्रतिबंधक रोग—जैसे मासिक धर्म बंद होना या उस वक्त वेदना होना आदि—होता है। पूर्वजोंके शाप से संतति नष्ट होती है या होती ही नहीं। इसलिए ऐसे लोगोंने रवि की उपासना करना चाहिये। तीन साल कठोर साधना से संतति होकर बढती भी है। रवि पंचम में किसी भी राशि का हो तो पुत्र कम और कन्या ज्यादा यह फल मिलता है।

## षष्ठ स्थान का रवि

**आर्यग्रंथकारः**—अरिगृहगतभानौ योगशीलो मतिस्थो निजजनहितकारी ज्ञातिवर्गप्रमोदी। कृशतनुगृहमेधी चारुमूर्ति-र्विलासी भवति च रिपुजेता कर्मपूज्यो दृढाङ्गः॥ यह योगाभ्यास करता है। अपने लोगों का कल्याण करता है। जाति के लोगों को सुख देता है। पतले कद का और घर गृहस्थी सम्हालने वाला होता है। दिखने में सुंदर, विलासी, शत्रुओं पर विजय पानेवाला, कार्य में मग्न और शरीर से मजबूत होता है।

**कल्याणवर्मा:**—प्रबलमदनोदराग्निर्बलवान् षष्ठं समाश्रयिणि भानौ। श्रीमान् विख्यातगुणो नृपतिर्वा दण्डनेता वा॥ कामवासना और भूख बहुत अधिक होती है। बलवान, श्रीमान और प्रसिद्ध राजा या सेना का अधिकारी होता है।

**हिल्लाजातककार**—आयु के ९ वें वर्ष में पिता का मृत्यु होता है। २३ वें वर्ष में खुद मरने का भय होता है।

**यवनमत**—यह धनवान, सुंदर, निरोग, शत्रुओं पर विजय पानेवाला और मामा का सुख पानेवाला होता है।

**राफेल**—तबियत अच्छी नहीं रहती। रवि दूषित हो तो बहुत और लंबी बीमारियां होती हैं। स्थिर राशियों में हो तो गलरोग—जैसे क्विन्सी, डिफ्थेरिया, ब्रांकाइटिस, अस्थमा—होते हैं। हृदय के रोग, पीठ और कोंख निर्बल होना, मूत्ररोग ये फल भी होते हैं। साधारण राशियों में और खास कर कन्या और मीन में क्षय का डर होता है। फेंफडों में बाधा पहुंचती है। चर राशियों में यकृत के रोग, निरुत्साह, छाती दुर्बल होना, पेट के रोग, संधिवात, कोई बडी जख्म, इनकी संभावना है।

**मेरे विचार**—इन शास्त्रकारोंने बलवान, श्रीमान, अपने लोगों को हितकर, जाति को हितकर, हमेशा सुख देनेवाला, उद्यमी, वाहन संपन्न, रोगयुक्त और प्रवास में क्लेश सहने वाला ये फल बताये हैं। हरिवंश के श्लोक के अनुसार—सुखी, पवित्र और प्रेमी ये फल रवि यदि इस स्थान में स्त्री राशि में हो तो मिलते हैं। शत्रुओं का नाशक, शूर, मामा का सौख्य कम मिलने वाला, सरकार द्वारा सम्मानित—(पुराने समय में) रायबहादुर आदि उपाधियाँ प्राप्त करने वाला, स्त्रियों को अप्रिय, कामी, तेज भूख वाला, अधिकारी, योगाभ्यासी ये सब फल पुरुष राशियों में मिलते हैं। राफेल के कहे हुये रोग फल स्त्री राशियों में मिलते हैं।

**मेरा अनुभव**—यह रवि पुरुष राशि में हो तो कामी, अभिमानी, क्रोधी, अत्यधिक खानेवाला, पूर्व आयुष्य में उपदंश, प्रमेह आदि रोग होकर उत्तर आयुष्य में तकलीफ पानेवाला होता है। मामा का पक्ष नाश को प्राप्त होता है। मौसी विधवा होती है या उसको पुत्रसंतति नहीं होती। शत्रु का नाश करता है। शिक्षा में स्मृति की शक्ति कम होती है। स्मरण नहीं रहता। दूसरों की बुरी बातों का स्मरण रखता है, उनका अपमान करता है। इसके नौकर भी मिजासखोर और बेपर्वा होते हैं। यह नौकरी करे तो अधिकारियों से झगडे कर बैठता है। यही रवि स्त्री राशि में हो तो किसी से तोडकर नहीं बोलता। मीठा बोलकर काम बना लेता है। इन राशियों में सब शुभ फल मिलते हैं। ये लोग रसोई अच्छी बनाते हैं। घर की व्यवस्था, रोगी की सेवा अच्छी करते हैं। अत्यधिक खाने से बद्धकोष्ठ और कृमि विकार होते हैं। ये लोग स्त्रियों को प्रिय होते हैं। पत्नी की मर्जी के अनुरूप रह कर उसे खुश करते हैं। मामा, मौसी बहुत होते हैं।

## सप्तम स्थान का रवि

**वैद्यनाथ**—स्त्रीद्वेषी मदनस्थिते दिनकरेऽतीव प्रकोपी खलः। स्त्रियों का तिरस्कार करनेवाला, बहुत क्रोधी, दुष्ट होता है।

**आर्यग्रन्थकार**—युवतिभुवनसंस्थे भास्करे स्त्रीविलासी न भवति सुखभागी चंचलः पापशीलः। उदरसमशरीरो नातिदीर्घो न ह्रस्वः कपिलनयनरूपः पिङ्गकेशः कुमूर्तिः॥ स्त्री भोक्ता, सुख न पानेवाला, एक जगह न रहनेवाला, पापी, सम शरीरका, न बहुत लंबा न बहुत छोटा, आंखों की पुतलियां काली, केश ललाई को लिये हुये, बेढंगा शरीर, ऐसा होता है।

**हिल्लाजातककार** - रामदोपरिमिते च वत्सरे सर्वसंपदमदाच्च सप्तमः। सप्तम का रवि २४ वें वर्ष में सब प्रकारकी संपत्ति का लाभ कराता है।

**यवनमत**—चिन्ता से ग्रस्त, कामासक्त, दुर्बल, बहुत बोलनेवाला और संग्राम में जय पानेवाला होता है। इसकी स्त्री दुर्बल होती है।

**राफेल**—अभिमानी पति या पत्नी, उच्च और भव्य आचरण के साथ उदारता, उद्योग और साझेदारी में यश प्राप्ति ये फल हैं। किन्तु बहुतसा रवि की राशि पर और अन्य ग्रहों की दृष्टि पर निर्भर है।

**मेरे विचार** – हमारे प्राचीन शास्त्रकारोंने इस स्थान के रवि के सब फल बुरे कहे हैं। इनका विचार करते हुये मेष, सिंह, मकर इन राशियों में ही वे मिलते हैं। अस्त के समय रवि निस्तेज और प्रकाशहीन होता है उस घर से बुरे फल की कल्पना की गई होगी।

हमारे ग्रन्थकारोंने एक भी अच्छा फल नहीं दिखाया। पाश्चात्य प्रंशकारोंको सब अच्छे ही फल नज़र आये हैं।

**मेरे अनुभव**—यह रवि मिथुन, तुला और कुंभ में हो तो विषयी, शिक्षा विभाग में प्रगति करता है। पोस्ट या तार विभाग में जाता है। अधिकारी या कानून विशेषज्ञ होता है। संगीत, नाट्य, रेडियो इनमें भी प्रगति कर सकता है। संतति एक दो या बिल्कुल ही नहीं होती। मेष, सिंह और धनु इन राशियों में यह रवि हो तो दो विवाह होते हैं। एक ही विवाह हो तो अधिक आयु में होता है। स्वतंत्र उद्योग करता है। नौकरी नहीं चाहता। इन छः राशियों में साधारण फल ऐसे होते हैं। व्यवहार का ज्ञान नहीं होता। उदार और लोगों पर भरोसा रखनेवाला है। इससे लोग इसको ठगाते हैं। अधिकार की भावना तीव्र होने से अपने मातहत लोगों पर ख्याल कम रहता है। बेफ़िकर होता है। बहुत पैसा मिलता है और खर्च भी हो जाता है। बडे बडे काम करता है। मानसन्मान प्राप्त होता है। पौरुष पूर्ण बर्ताव होता है। दयालु वृत्ति रहती है। स्त्री राशियों में खासकर वृषभ, कन्या और मकर इनमें यह रवि हो तो व्यापार अच्छा करता है। म्युनिसिपालिटी, जनपद या विधान सभा में चुनकर आता है। सीधा बर्ताव करता है। कर्क, वृश्चिक और मीन में यह रवि हो तो डाक्टर या विज्ञान का पदवीधर होता है। नहर या नल के अधिकारी होते हैं। सोडावाटर या औषधों के कारखाने चलाता है। सप्तम के रवि का सब राशियों में सामान्य फल इस प्रकार है। स्त्री अधिक प्रभावी होती है। वृत्ति और बर्ताव से वह अच्छी शीलवान होती है। वह श्रीमान घराने की किन्तु आपत्ति के समय पति को ही साथ देनेवाली होती है। संसार में कुशल और उदार होती है। अतिथियों से उकताती नहीं। उनका उचित सत्कार करती है और उसीमें

सात्विक गौरव अनुभव करती है। गरीबों के लिये दयालु और नौकरों पर रौब जमाकर काम करा लेनेवाली होती है। इन सब गुणोंके बावजूद वह पति पर प्रभुत्व जमाने का अथक प्रयास करती है। तिजोरी की चाभी उसके पास हो तो संतुष्ट रहती है। बरतात्र में प्रौढ, देखने में सुंदर, केश लम्बे और घने, वर्ण कुछ ललाई लिए हुए गौरवर्ण ऐसा उसका रूप होता है। अभी पिछले पचास वर्षों से परिस्थिति के बदलने से लडके लडकियां विवाह के समय अधिक आयु के और सुशिक्षित होते है और स्वयं ही प्रीतिविवाह करते हैं। इस परिस्थिति में इस रवि के फलादेश में नयी वृद्धि करनी पडेगी। इसका स्वरूप यों है। दोनों में चिकित्सा बुद्धि होती है। मनचाही स्त्री मिले तो ही शादी करूंगा ऐसे विचार से ३६ वें वर्ष तक कुंआरा ही रहता है। प्रीति नष्ट होने से कानून की इजाजत हो तो घटस्फोट भी लेता है। मेरा अनुभव ऐसा है कि मेष, सिंह, धनु और मीन का रवि प्रीति का नाश करवा कर किसी दूसरी लडकी से शादी कराता है और पश्चात् झगड़ा करा कर तलाक दिलाता है। इस रविका एक बुरा फल और है। वह यह कि आपत्ति के समय ससुर की शरण लेनी पडती है। अपमान के साथ उनके यहां रहना पड़ता है। ससुर का वास्तविक प्रेम कम होता है। वृषभ, कन्या, मकर, कर्क, वृश्चिक और मीन इनके रवि में आयु के ५० वें वर्ष तक धंधा या नौकरी अच्छी चलती है पश्चात् एकदम बंद हो जाती है। पुरुष राशि के रवि में परिस्थिति में हमेशा उतारचढाव होते रहते हैं। स्त्री की मृत्यु ५०-५२ में होती है। इस समय घर में अडचन होते हुए भी दूसरी शादी करना संभव नहीं होता। पुरुष राशि में संतति कम और स्त्री राशि में अधिक होती है। ५० वें वर्ष के बाद प्रगति कम होती है।

## अष्टम स्थान का रवि

वैद्यनाथ—मनोभिरामः कलहप्रवीणः पराभवस्थे च रवौ न तृप्तः। सुंदर, झगडे करने में प्रवीण, सदा असंतुष्ट होता है।

आर्यग्रंथकारः—निधनगतदिनेशे चंचलस्त्यागशीलः किल बुधगणसेवी सर्वदा रोगयुक्तः। विकलबहुलभाषी भाग्यहीनो विशालो रतिविहितकुचैलो नीचसेवी प्रवासी॥ चंचल, त्यागी, विद्वानों का सेवक, सदा रोगी, विकल, बकबक करनेवाला, अभागा, बडे शरीर का, व्यभिचारी, नीचों का सेवक, मैले कुचैले वस्त्र पहनने-वाला, प्रवास करनेवाला होता है।

हिल्लाजातककारः—चतुस्त्रिंशन्मिते वर्षे स्त्रीनाशमष्टमो रविः। आयु के ३४ वें वर्ष में स्त्री की मृत्यु कराता है।

यवनमत—परदेश में भुख प्यास से मारे मारे फिरना पडता है। बहुत भटकता है और दुखी होता है।

राफेल—पति या पत्नी बहुत खर्चीले होते हैं। मंगल की युति या पूरी दृष्टि हो तो आकस्मिक मृत्यु की संभावना होती है।

मेरे विचार—अष्टम स्थान को मूलतः नाश स्थान माना है इसलिए इसके फल बुरे ही मिलते हैं ऐसी प्राचीन शास्त्रकारोंने कल्पना की है। ये फल मेष, सिंह और धनु में ही मिलते हैं। मिथुन, तुला और कुंभ में कम मिलते हैं। स्त्री राशियों में साधारणतः अच्छे फल मिलते है। हिल्लाजातककार का मत अनुभव में नहीं आता। कुछ काल वियोग अवश्य होता रहता है।

मेरा अनुभव—मिथुन, कर्क, धनु और मीन इन राशियों में सावधान अवस्था में मृत्यु होती है। मेष, सिंह में झटके से मृत्यु हो जाती है। अन्य राशियों में दीर्घकालीन बीमारी से तकलीफ होकर

मृत्यु होती है। पुरुष राशि में रवि हो तो घर की गुप्त बातें जो दूसरे न जाने ऐसी इच्छा होती है, परन्तु नौकर या स्त्री के द्वारा दूसरे जान लेते हैं। स्त्री खर्चीली होती है। उसके सिर और शरीर में तकलीफ होती है। पुरुष राशि के रवि में स्त्री पैसे के लिए, पति को बढती दिलाने के लिये या अपना काम बनाने के लिए परपुरुषगमन करती है ऐसा मेरा मत है। अष्टम का रवि स्त्री के पहले मृत्यु कराता है जब कि धनस्थान का रवि स्त्री के बाद मृत्यु कराता है। इस रवि से वृद्धावस्था में दरिद्रता होती है। रवि के ही समान इसके भाग्य का भी अस्त होता है। यह स्थिति ५० वें वर्ष के पश्चात् की है। स्त्री राशि के रवि में संतति बहुत होती है। पुरुष राशि में बिलकुल कम होती है। पूर्व आयु में शारीरिक कष्ट अधिक होते हैं। पैतृक संपत्ति नष्ट होती है। ससुर गरीब होता है। इस रवि के कारण खुद पाप नहीं करता, दूसरों का पाप सहन नहीं करता और व्यसन में नहीं डूबता।

## नवम स्थान का रवि

**बैद्यनाथः**—आदित्ये नवमास्थिते पितृगुरुद्वेषी विधर्माश्रितः। पिता और गुरुजनोंका द्वेष करनेवाला और धर्मान्तर करने वाला होता है।

**आर्यग्रन्थकारः**—ग्रहगतदिननाथे सत्यवादी सुकेशी कुलजन-हितकारी देवविप्रानुरक्तः। प्रथमवयसि रोगी यौवने स्थैर्ययुक्तो बहुतरधनयुक्तो दीर्घजीवी सुमूर्तिः॥

सत्य बोलने वाला, केश अच्छे, कुल और संबंधियों का हित करनें वाला, ईश्वर और साधुओं का भक्त, बचपन में रोगी, जवानी में मजबूत, बहुत धनी, दीर्घायु वाला और सुंदर होता है।

**हिल्लाजातककारः**—आयु के १० वें वर्ष में तीर्थयात्रा और धर्म कृत्य कराता है।

यवनमतः—विख्यात, सुखी, देवभक्त, मामा का सुख पाने वाला होता है।

राफेलः—स्थिर, सन्माननीय, न्यायी, ईश्वरभक्त, बर्ताव में अच्छा, जलराशि में हो तो सागरपर्यटन करने वाला होता है।

मेरा अनुभवः—यह रवि मिथुन, तुला और कुंभ का हो तो छोटा भाई नहीं रहता। २२ वें वर्ष तक उसकी मृत्यु हो जाती है। शायद सभी राशियों में यह होगा। मृत्यु नहीं हुई तो दोनों में पटता नहीं। समझौता करके अलग हो जाते हैं। एक जगह रहे तो दोनों में किसी एक का ही उदय होता है। संसार का भार जल्दी उठाना पडता है। पिताको अकेला ही पुत्र होता है। इसको पुत्र संतति कम होती है। ग्रंथकार की तो ग्रंथ ही संतति होती है। धर्म याने क्रियाकांड में रुचि नहीं होती। संस्कृति के बारे में प्रेम रहता है। स्वभावतः इस स्थान से स्त्री के धर्म या जाति का पता चल सकता है। आज कल विवाह में जाति और धर्म के बंधन बहुत कम हो रहे हैं। इसलिए इस रवि पर से स्त्री दूसरी जाति की या आयु में अधिक होने से रजिस्टर विवाह होगा। इस बारे में ज्योतिषी लोगों को सोचना चाहिये, इसकी पितासे बनती नहीं। लोगों में मिलनसार स्वभाव नहीं होता। अभिमानी किंतु समय पर दूसरों को खुद मदत करने वाला होता है। अधिक शिक्षा न होने पर सुशिक्षित जैसा मालूम पडता है। आयु के ४२ से ५४ तक भाग्योदय होता है। बाद में हानि होती है। पूर्व आयु में तकलीफ, बीच में सुख, उत्तर आयु में दुख ऐसा इस रविका फल है। मिथुन, तुला व कुंभ में यदि रवि हो तो प्रोफेसर, लेखक या प्रकाशक होता है। कर्क, वृश्चिक और मीन में हो तो रसायन विद्या का संशोधन, कवि या नाटककार होता है। वृषभ, कन्या और मकर में हो

तो खेती, व्यापार या किसी लॉज का चालक बनता है। मेष, सिंह और धनु में हो तो सेना में या इंजीनियर होकर काम करता है। इस स्थान का रवि कुछ न कुछ ख्याति देता है।

## दशम स्थान का रवि

**वैद्यनाथः**—मानस्थिते दिनकरे पितृवित्तशीलविद्यायशोबलयुतोवनिपालतुल्यः। पैतृक संपत्ति का उपभोक्ता, विद्यासंपन्न, कीर्तिमान, बलवान, राजा जैसा ऐश्वर्यशाली होता है।

**आर्यग्रंथकारः**—दशमभुवनसंस्थे तीव्रभानौ मनुष्यो गुणगणसुखभागी दानशीलोभिमानी। मृदुलघुशुचियुक्तो नृत्यगीतानुरागी नरपतिरतिपूज्यः। शेषकाले च रोगी॥ गुणवान, सुखी, दानी, अभिमानी, कोमल, पवित्र, नाच गानों का शौकीन, राजा जैसा संपन्न, पूज्य और उत्तर वय में रोगी होता है।

**हिल्लाजातककारः**—एकोनविंशद्दशमे वियोगः। दशम के रवि से १९ वें वर्ष में वियोग होता है।

**यवनमतः**—धनवान, शीलवान, मानी, खुश मिज़ाज़, वाहन संपन्न, विख्यात और धूर्त होता है।

**मेरा अनुभवः**—इस स्थान का रवि मेष, कर्क, सिंह, वृश्चिक, धनु इन राशियों में हो तो रेव्हेन्यू, पुलिस, सेना या आबकारी विभाग में या खुफ़िया पुलिस में काम करता है। किंतु शस्त्र के स्थान पर कलम से काम लेना पडता है, मतलब यह कि ऑफिस का ही काम करना होता है। वृषभ, कन्या, मकर, मीन, मिथुन इन राशियों में रवि हो तो राज्यपाल या राष्ट्रपति के मंत्रियों में और संसद या विधान सभा में स्थान मिलता है। व्यापारी भी हो सकता है। तुला में हो तो जज, सॉलिसिटर, बैरिस्टर, आदि सम्मान के पद मिलते हैं। वृश्चिक

में हो तो डॉक्टर भी हो सकता है। खुद के श्रम से ही तरक्की होती है। अपने विभाग में तो प्रसिद्ध होता ही है। पिताका सुख कम होता है। उसकी मृत्यु नहीं हुई तो झगडे होते हैं। स्वभाव से उदार किंतु घमंडी, झगडालू और विषयासक्त होता है। मैं दशम के रवि को दुर्भाग्य दर्शक मानता हूं क्योंकि इससे अंतिम समय अच्छा नहीं जाता। ये लोग जिस तरह जल्दी तरक्की पाते हैं उसी तरह भाग्य शिखर से नीचे भी गिरते हैं। जिस तरह सिर पर का रवि खूब तेजस्वी किन्तु नीचे की ओर जाता है उसी तरह इनका भी भाग्य अवनति को प्राप्त होकर नष्ट होता है और वृद्धावस्था में भयानक शरीर कष्ट, दरिद्रता, झगडे ये फल मिलते हैं। तुला के रवि से पेन्शन सुख से मिलता है। वही मेष के रवि से गैरकानूनी होता है। इससे बचपन में तकलीफ, मझली आयु में सुख और लोक प्रियता प्राप्त होती है। लोगों को हितकर किंतु धन की दृष्टि से हालत नीची ऊंची होती रहती है। आयु के २२ वें वर्ष से उद्योग करता है। हिल्लाजातककार ने १९ वें वर्ष में वियोग ऐसा संदिग्ध फल कहा है। किसी ग्रंथकर्ताने इसका अर्थ परदेश की सैर किया है जो गलत है। इस वर्ष में पिता की मृत्यु देखने में आई है। इससे मालूम होता है कि इसकी कमाई और दौलत का उपभोग पिता नहीं कर सकता। २८ वें वर्ष तक माता का भी वियोग होता है। ३२ से ४८ वें वर्ष तक धंधे में मजबूती किंतु बाद में वह नहीं रहती। आयु के अंतिम भाग में पत्नी मर जाती है।

## एकादश स्थान का रवि

वैद्यनाथः—भानौ लाभगते तु वित्तविपुलस्त्री पुत्र दासान्वितः। धनवान स्त्री पुत्रों से संपन्न और नौकरों की सेवा लेने वाला होता है।

कल्याणवर्मा:—संचयनिरतो बलवान् द्वेष्यः प्रेष्यो विधेय भृत्यश्च। एकादशे विधेयः प्रियरहित सिद्धकर्मा च॥

धन संचय करनेवाला, बलवान, द्वेषी, नौकरी करनेवाला, लोगों को अप्रिय, अपने काम बनानेवाला होता है।

हिल्लाजातककार:-एकादशस्थः खलु पुत्रलाभं कुर्याच्चतुर्विंशतिसंमितेच। यह रवि २४ वें वर्ष में पुत्र लाभ कराता है।

यवनमतः—धनवान, नौकरों से संपन्न, सुंदर स्त्री का पति, अच्छी इमारत का मालिक, अच्छे पदार्थ खाने वाला, गाने बजाने का शौकीन, गुप्त विचार करनेवाला, अच्छी आंखों वाला होता है।

राफेल—स्थिर और विश्वासयोग्य मित्र होते हैं। रवि बलवान हों तो वे इसको मदद करते हैं किन्तु वह दूषित या निर्बल हो तो मदद के स्थान पर बोझ बन जाते हैं।

मेरे विचार—प्राचीन शास्त्रकारोंने इस रवि के फल अच्छे ही दिये हैं। किंतु वे किस राशि में मिलते हैं यह नहीं बताया। मेरा अनुभव ऐसा है कि इस रवि से कोई एक दुःख पीछे लगा रहता है। संपत्ति हो तो संतति नहीं होती। संतति हो तो संपत्ति नहीं होती। हां इसके साथ अन्य पाप ग्रह शुभ योग करते हों तो दोनों सुख मिलते हैं। यह स्थान जनपद, कौन्सिल, सभा, क्लब, बडा भाई इत्यादि का विचारक है इसलिए इनके भी फल इस रवि में देखने चाहिये। पश्चिमी ज्योतिषी इस स्थान में भिन्न भिन्न परिवार के सुख और मित्रों की मदद ये फल बताते हैं। हमारे ग्रन्थकारोंने मित्र का विचार चौथे स्थान से किया है। इस स्थान का रवि बडे भाई को मारक होता है। इच्छाएं उदार और लोगों का हित करने की होती हैं। चौथी संतति नष्ट होती है। पिता का स्वभाव खर्चीला होता है।

मेरा अनुभव— यह रवि मेष में हो संतति नहीं होती। हुई तो रहती नहीं। सिर्फ पैसा मिलता है। शिक्षा कठिनाई से पूरी होती है। बडी आकांक्षाएं होती हैं किंतु सफल नहीं होती। विद्वानों में अपमान होता है। मिथुन में हो तो दो या तीन पुत्र मर जाते हैं। पैसा खूब और बिना कष्ट के मिलता है। दुष्ट स्वभाव होता है। लोगों के झगडों में नहीं पडता। बेकार ही घमंड होता है। मिलनसार स्वभाव नहीं होता। अपने लिए विलासी होता है। यह सिंह का हो तो दरिद्रता होती है। लडकियां अधिक होती हैं। तुला में हो तो पैसा, सम्मान, कीर्ति मिलती है। कानून का विद्वान होता है। संतति नहीं होती या रहती नहीं। सार्वजनिक कामों में पडते हैं। जनपद आदि के कार्य-कर्ता होते हैं। नेता लोगों का रवि अक्सर तुला में होता है। धनु का रवि कानुन विशेषज्ञ बनाता है। पैसा हो तो संतत्ति नहीं होती। संतति हो तो पैसा नहीं होता। कुंभ के रवि में दरिद्री होता है। किसी भी धंदे में लाभ नहीं होता। सभी पुरुष राशियों के रवि में बडा भाई नहीं रहता। रहा भी तो २२ वें वर्ष तक मर जाता है। नहीं मरा तो झगडे होकर अलग होता है। स्त्री राशि के रवि से संतति संपत्ति मिलती है। शिक्षा नहीं होती। ये लोग बडे बडे काम दूसरों से करवाते हैं। अपने कष्ट से दूसरों का काम करवा देते हैं। पुरुष राशि के रवि में संपत्ति मेहनत से मिलती है। स्त्री राशि के रवि में अचानक मिल जाती है। हिल्लाजातककार का मत उच्च वर्ग के लोगों में नहीं मिलता क्योंकि विवाह का वय बढता ही जा रहा है। नीचे के वर्ग में अनुभव आता है।

## द्वादश स्थान का रवि

वैद्यनाथः—व्ययस्थिते पूषणि पुत्रशाली व्यंगः सुधीरः पति-तोटनःस्यात्। पुत्रयुक्त, व्यंगयुक्त, धैर्यशाली, धर्मभ्रष्ट, भडकने वाला होता है।

आर्यग्रंथकार-नरपति धनयुक्तो द्वादशस्थे दिनेशे कथकजन विरोधी जंघरोगी कृशांगः। राजा, धनी, लोगों का विरोध करने वाला, जंघाओं में रोगी, पतले कद का होता है।

हिल्लाजातककार:--व्ययस्थिते हक्त्रिमितेच हानिम्। इस से ३२ वें वर्ष में हानि होती है।

यवनमत--यह रवि चंद्र से युक्त न हो तो अंतिम आयु में विजयी और भाग्यवान होता है। ये लोग अजत्र ही होते हैं। बडे मेहनती और धूर्त होते हैं किंतु सफलता कम मिलती है।

राफेल--जीवन में सफलता किंतु यदि यह दूषित हो तो कारावास होता है।

मेरे विचार--आर्यग्रंथकार को छोडकर अन्य प्राचीन शास्त्रकारोंने इसके फल सब बुरे बताये हैं। व्ययस्थान बुरे ही फल का है ऐसी ही कल्पना से अच्छे फल दिख ही कैसे सकते हैं। आर्यग्रंथकारने जरूर अच्छे फल बताये हैं। इस स्थान में बाल अवस्था को छोडकर कुमार में प्रवेश होना है। कुमार अवस्था में उद्धत वृत्ति, किसी की न सुनना, बढता जोश, जवानी में अपने मन की करना ये बातें होती हैं। अपने हितकी जानकारी न होने से लडाई झगडे करना, लडकियों के पीछे लगना ये बातें भी होती हैं। कभी जोश में अच्छे भी काम हो जाते हैं। इसलिए इसके फल बुरे ही मिलते हैं ऐसा नहीं। अच्छे भी फल मिलते हैं।

मेरा अनुभव--इस स्थान का रवि कर्क वृश्चिक, मीन इन राशियों में हो तो खर्चीला, बेफिकर, राजनैतिक कारावास पाने वाला, लोगों को उपकारी, युद्ध में पराक्रमी होता है। वृषभ, कन्या, मकर इन में ध्येयवादी, उसमें आने वाले सब संकट शांत वृत्ति से सहनेवाला,

अच्छे कामों में ख्याति पाने वाला, स्वतंत्र, धनप्राप्ति का इच्छुक और मन में कुढने वाला, कोई भी कार्य विचारपूर्वक करनेवाला होता है। मेष, सिंह, धनु इनमें कंजूस, अविचारी, घमंडी, खुद को ही विद्वान समझनेवाला, बुरे कामों में दंड पानेवाला होता है। मिथुन, तुला, कुंभ इनमें खर्चीला और विख्यात कम से कम अपने समाज में विख्यात होता ही है। नागपुर के डा० हरिसिंग गौर ग्रंथकार और कीर्तिमान थे। इनके व्ययस्थान में रवि था।

---

# प्रकरण ७ वाँ

## महादशा-विवेचन

प्राचीन शास्त्रकारोंने महादशा के फल सामान्य तौर पर दिये हैं। महादशा दो प्रकार की है-अष्टोत्तरी और विंशोत्तरी। महाराष्ट्र में दोनों प्रचलित हैं। अष्टोत्तरी १०८ वर्ष की और विंशोत्तरी १२० वर्ष की होती है। इनमें बहुत फर्क है। इनमें अष्टोत्तरी की उपपत्ति किस दृष्टि से दी होगी इसका पता नहीं चलता। विंशोत्तरी नवपंचम राशि के हिसाबसे ली गई है। उदाहरण के तौर पर अश्विनी. ( मेष ), मघा ( सिंह ), मूल ( धनु ) इस प्रकार है। दोनों दशाओं की वर्ष संख्या का प्रमाण भी भिन्न है।

भारतवर्ष में सैकडों वर्षों से जो पद्धति प्रचलित है उसकी कालगणना का प्रमाण निम्न प्रकार है-६० घटिका का एक दिन, ३० दिन का एक महिना, १२ महिनों का एक वर्ष। यह पद्धति वैदिक काल से चली आई है। ऋग्वेद में यही ३६० दिन का वर्षमान है। इसी प्रमाण से विंशोत्तरी पद्धति में अंतर्दशा का प्रमाण दिया है।

उदाहरणार्थ, रवि की विंशोत्तरी महादशा ६ वर्ष की है। अंतर्दशा इस प्रकार है—

| ग्रह | र. | चं. | मं | रा. | गु. | श | बु. | के. | शु. | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वर्ष | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | १ | १ |
| महीने | ३ | ६ | ४ | १० | ९ | ११ | १० | ४ | ० | ५७ |
| दिन | १८ | ० | ६ | २४ | १८ | १२ | ६ | ६ | ० | ९० |

उपर्युक्त गणित के अनुसार ही इसका जोड ६ वर्ष होता है। इस वर्षमान को सावन मान कहते हैं।

। महादशा का अनुभव यह एक बडा जटिल प्रश्न है। हर एक ने अपने अनुभव से ही इसका निश्चय करना चाहिये। सबको सब जगह मेरे जैसा अनुभव आयेगा ही यह कहना कठिन है। महादशा का विस्तृत फलादेश सर्वार्थचिंतामणि, मानसागरी, जातकपारिजात, बृहत्पाराशरी इन ग्रंथों में मिलता है।। किंतु मैं जिस पद्धति से विवेचन करता हूं उसे ही यहां संक्षेप से दिया है। विंशोत्तरी पद्धति के आरंभ में यही महादशा है। इसलिए कृत्तिका नक्षत्र के व्यक्तियों को बच-पन से ही ७ वें वर्ष तक ही आती है। इसमें बीमारी बहुत होती है। आमांश, अतिसार, देवी, ज्वर, बालग्रह, सूखा, नजर लगना इत्यादि रोगों में से कोई रोग होता है। मां बाप को आर्थिक और मानसिक तकलीफ होती है। बाप की मृत्यु भी हो सकती है। भरणी नक्षत्र को यह दशा २१ वें वर्ष से आरंभ होती है। इस समय शिक्षा पूरी होकर पैसा मिलाने की इच्छा, विवाह, संतान की प्राप्ति ये योग होते हैं। इसमें भी पिता की मृत्यु हो सकती है। आजकल विवाह की वयो-मर्यादा और धनार्जन के आरंभ का काल देर से आता है इसलिए इस फलादेश में कुछ फरक हो सकता है।

अश्विनी नक्षत्र की यह दशा २७ वें वर्ष से आरंभ होती है। इस समय इसके फल शिक्षा पूरी होना, नौकरी के लिए प्रयत्न करना, पिता को पेन्शन मिलना, मां की मृत्यु ऐसे होते हैं। रेवती नक्षत्र की ४४ वें वर्ष से यह दशा आरंभ होती है। इस समय ख्याति लाभ, नौकरी में बढती, कीर्ति, संतान और संपत्ति की प्राप्ति ये फल मिलते हैं किंतु ४० से ५० तक पत्नी का मृत्यु होने की संभावना होती है। उत्तरा भाद्रपदा नक्षत्र को ६४ वें वर्ष से यह दशा आरंभ होती है। यह समय सब तरह से निवृत्त होने का है।

द्वादश भावों में रवि के जो फल दिये हैं वे ही दशा के समय मिलते हैं। किंतु कई नक्षत्रों को सारी आयु में यह दशा आती ही नहीं। जैसे—रोहणी, मृग, हस्त, चित्रा, श्रवण और धनिष्ठा इन नक्षत्रों में चंद्र हो तो रवि महादशा आती ही नहीं। फिर इसके फल किस तरह मिलेंगे ? भावों के बुरे फल कहे हैं वे रवि की साढेसाती में और शनि, राहु, मंगल इनकी अंतर्दशा में मिलते हैं। अच्छे फल कहे हैं वे शुक्र, चंद्र, गुरु इन शुभ ग्रहों की अंतर्दशा में मिलते हैं।

सूचना—दशा के फल देखते हुए-रवि के साथ कोई दूसरा पापग्रह हो या गुरु भी हो तो बुरे फल मिलते हैं। पत्रिका में सिंह राशि में लग्न में रवि के साथ गुरु हो और चंद्र भरणी नक्षत्र में १० घटि १७ पल रह चुका है—पूरा नक्षत्र ६६ घटी है—ऐसी हालत में पहले १६ वर्ष शुक्र महादशा होती है। १७ वें वर्ष से रवि की महादशा प्रारंभ होगी। इस दशा में पहले ही पिता का मृत्युयोग बताना पडेगा। याने यहां गुरु नाशकारक ग्रह हुआ। ऐसा ग्रह रवि के साथ युति करता हो तो रवि के महत्त्वपूर्ण कारकों का नाश होता है। महादशा का फल खुद किस तरह देखें इसका उदाहरण इस प्रकार है। रवि

मेष लग्न के पहिले अंश में है और चंद्र सिंह राशि के पहिले अंश में है। यहाँ रवि पंचमेश हुआ। इसलिए पंचम स्थान और लग्न का फल मिलेगा। यह दशा आयु के २७ वें वर्ष से आरंभ होती है। शिक्षा पूरी होगी, विवाह होगा, संतति होगी, शायद परदेशगमन का भी योग है। नौकरी या धंधे में प्रगति होगी। किंतु इस ही को यदि शनि का वेध होगा तो मां बाप की मृत्यु, बच्चों का वियोग, बाप की इस्टेट का नाश ऐसे फल मिलेंगे। एक खास सूचना यह कि महादशा और अंतर्दशा के फल प्राचीन ग्रंथकारोंने अपने अपने काल की और प्रदेश की परिस्थिति के अनुसार दिये हैं। किंतु इस समय उन्हीं पर बल न देकर अपनी बुद्धिका भी उपयोग करना चाहिये। मेरा ऐसा मत है कि रवि की दशा मूलतः बुरी होती है। किंतु लग्न, पंचम, दशम, व्यय इन चार स्थानों में रवि की दशा उत्तम होती है। बाकी स्थानों में बुरी होती है। इस महादशा में शनि, मंगल और चंद्र ये तीन अंतर्दशाएं बुरी होती हैं। अन्य ग्रहों की दशाएं शुभ होती हैं। मेष राशि को बहुत बुरा, सिंह को मामूली और धनु को अच्छा फल मिलता है। वृषभ, कन्या और मकर को मामूली मिलता है। मिथुन, तुला कुंभ को अच्छे ही फल मिलते हैं। कर्क, वृश्चिक, मीन को मामूली मिलते हैं। ये फल देखते हुए रवि चंद्र योग की ओर ध्यान देना चाहिये।

पश्चिमी ज्योतिषी एलन लिओ ने Astrology for All नामक ग्रंथ में १८ वें अध्याय के ७१ वें पृष्ठ पर Polarities शीर्षक से रवि चंद्र के योगों के फल दिये हैं। ये ही फल दशा के लिए कहे जा सकते हैं। पाठकों ने अनुभव देखना चाहिये।

---

# प्रकरण ८ वाँ

## रवि-कुण्डली

ऐसा कई बार देखने में आता है कि लड़के की पत्रिका मिलती है किन्तु मां बाप की पत्रिकाएं उपलब्ध नहीं होतीं। अब इन माता पिताको अपना भविष्य जानने की इच्छा होती है। ऐसे समय क्या करें ? उत्तर यह है कि लड़के की कुण्डली से माँ बापका मृत्यु तक भविष्य बताया जा सकता है। उदाहरण के लिए निम्न कुंडली देखिए। 'क्ष' ता० २९ अप्रैल १९३७ दोपहर को ११-४९ को जन्म, अक्षांश २१-९ रेखांश ७९।

पिताका कारक ग्रह रवि है इसलिए पिताका भविष्य जानने के लिए रवि-कुण्डली बनानी होगी। वह इस प्रकार होती है—
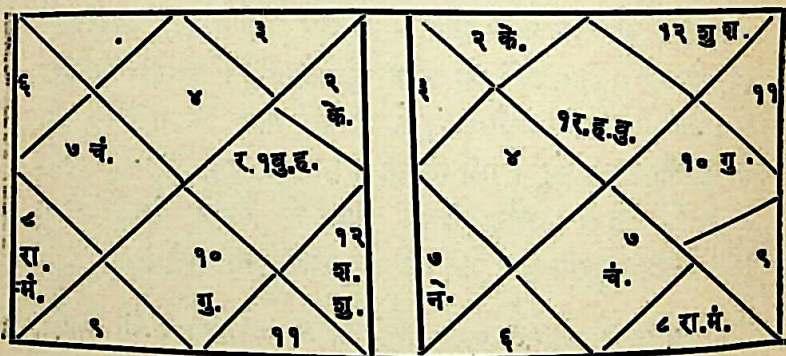
जन्म कुण्डली। रवि-कुण्डली।

### इस रवि-कुण्डली का विवेचन।

मेष लग्न में उच्च का रवि है और साथ में बुध और हर्शल हैं। शरीर का ढांचा मामूली होगा। सदा अर्श से तकलीफ होगी। स्वभाव

कुछ हठी, दुराग्रही किन्तु शांत है। बुध हर्शल योग से बुद्धिमान है किन्तु बुद्धि का प्रभाव हाल में दिखाई नहीं देता।

**धनस्थान**—इस स्थान का अधिपति शुक्र शनि के साथ है। शनि स्थावर इस्टेट का कारक है। इस नियमके अनुसार पैतृक संपत्ति नगद के रूप में न होकर स्थावर संपत्ति मिलना चाहिए। इस योग से थोडा कंजूसपना दिखाई देता है और धनसंग्रह भी अच्छे प्रकार होता है। धनका संग्रह बागबगीचे, खेतीवाड़ी इनमें होता है उद्योग में यश मिलता है।

**तृतीय स्थान**—इसका अधिपति बुध रविसे युक्त है इसलिए कोई बडा भाई नहीं रहेगा।

**चतुर्थ स्थान**—इसका अधिपति चंद्र सप्तम में है। माँ का स्वभाव अति शांत, व्यवहार में दक्ष, स्नेहशील, दयालु होता है किन्तु संसारमें चाहिए उतना सुख नहीं मिलता। क्योंकि चंद्रके सामने उच्च रवि है। माता का सुख पूरा है। इसी योगसे वयके ३६ से ४२ वें वर्ष तक स्थावर इस्टेट मिलेगी। आयु के उत्तरार्ध में सब प्रकार का सुख मिलेगा।

**पंचम स्थान**—इसका अधिपति रवि उच्च है और हर्षल से युक्त लग्न में है। इस स्थान में नेपच्यून है। पश्चिमी ज्योतिषी कहते हैं कि इसके लोग इष्कबाज़, शौकीन और इष्कसे किसी मुसीबत में फंसनेवाले होते हैं। इस ग्रहसे संतान बहुत होती है। पहले लडकियाँ अधिक होती हैं।

**षष्ठ स्थान**—इसका अधिपति बुध लग्न में है। इससे घरके लोगों से ही विरोध होता है।

**सप्तम स्थान**—इसका अधिपति शुक्र व्ययस्थान में शनि से युक्त है। इससे पत्नी का वय खुद के वय से अधिक होता है या विधवा से पुनर्विवाह होता है या विजातीय स्त्री से विवाह होता है अथवा रजिस्टर पद्धति से होता है। अंग्रेजी ग्रंथों में ऐसी स्त्री का स्वभाव अच्छा दिया है। वह खर्चीली, अभिमानी, झगडालू, प्रपंच में आसक्त, मिलजुलकर न रहनेवाली, बुद्धिमान और पतिको अपने प्रभाव में रखने का प्रयत्न करने वाली होती है। उसकी शिक्षा अनेक बाधाओं के पश्चात् पूरी होती है। माँ का सुख पूरा होता है।

**अष्टम स्थान**—यहां राहु और मंगल साथ है और मंगल स्वगृह में है। पत्नी की वृत्ति स्वतंत्रता से धन कमाने की ओर प्रयत्न करने की रहेगी। इसलिए पति से हमेशा झगडे करके स्वतंत्रता प्रकट करेगी। ४२ वें वर्ष में कोई बडा आर्थिक लाभ होना ही चाहिए। मरण आकस्मिक होगा। ६८ वें वर्ष में मृत्यु की संभावना है। शायद पत्नीको पीछे छोड़कर मृत्यु हो।

**नवम स्थान**—इसका अधिपति गुरु दशम में मकर राशि में है। ३६ वें वर्ष से भाग्योदय आरंभ होगा। तबतक कोशिश ही करनी पडेगी। कीर्ति अच्छी मिलेगी। धंधे के लिए या उसकी शिक्षा के लिए विदेशों में प्रवास होगा। इस योग में एक ही छोटी बहिन होगी।

**दशम स्थानः**—इसका अधिपति शनि व्ययस्थान में शुक्र के साथ है। इस स्थान में गुरु है। दशम में गुरु होना भाग्य का लक्षण है। किंतु इस गुरु में कुछ दोष हैं। पिता की मृत्यु १२, २४, ३६ या ४८ वें वर्ष में होती है। यदि १२ या २४ वें वर्ष में पिता की मृत्यु नहीं हुई तो ३६ वें वर्ष में नहीं होती ऐसा मेरा स्पष्ट मत है। इसी तरह इस गुरु से बाप बेटे में मनमुटाव रहता है। बाप बेटे

दोनों एक साथ नहीं कमा सकते। किसी एक का हाथ चलता है। जब बाप कमाता है तब बेटा काम नहीं कर पाता और बेटा कमाने लगता है तब बाप का काम बंद होता है। यह कुंडली जिसकी है उसका बाप क़मा रहा है तो दादा काम नहीं कर रहे हैं और आगे ऐसे ही रहेंगे। पिता के बाद ही पूरा भाग्योदय होता है। वह आख़िर तक रहता है। पत्नी भी कमाती है। उसका भाग्योदय होता है लेकिन वह स्वतंत्र रूप से होता है। पत्नी मास्टर या प्रोफेसर के व्यवसाय में आती है। पति पत्नी दोनों योग्यता प्राप्त करते हैं किंतु और एक डेढ साल आर्थिक, शारीरिक और मानसिक तकलीफ होगी। ३३ वें वर्ष से कुछ इच्छा के अनुरूप काम बनता जाएगा। पिता का सुख अच्छा होगा।

**लाभ स्थानः**—इसका अधिपति शनि व्ययस्थान में है। इसको पैसे के सिवाय दूसरी कोई इच्छा या वासना नहीं है। खूब पैसा कमा कर एक बंगला बांधकर आराम से खेतीवाडी करते रहें यही वासना है। यह पूरी होने के लिए ४८ वां वर्ष लगना चाहिए। मृत्यू के समय स्त्री और पैसे की ही चाह रहेगी।

**व्यय स्थानः**—इसका अधिपति गुरु दशम स्थान में है। यहाँ दशमेश शमि और शुक्र है। दशम और व्यय स्थान के ग्रहों का यह अन्योन्य संबंध है। इससे बाप कर्ज करता है और बेटा उसे लौटाता है। व्यवस्थान के शनि के विषय में पश्चिमी ज्योतिषी कहते हैं कि 'The Saturn in this house is rising and therefore you are promised much improvemet in worldly affairs as your life advances.' यह शनि कीर्ति देता है। किंतु यहां धनेश और सप्तमेश शुक्र मारक और मारकेश है। ऐसे मारक ग्रह के साथ शनि का

योग हुआ है। इसके फल Alon Leo ने ऐसे दिये हैं—You may meet the would-be wife who will affect your life seriously under rather peculiar circumstances. जीवन में भावी पत्नी से संबंध ऐसी अजीब परिस्थिति में आता है कि उसका परिणाम जीवन पर उलटा ही होता है। इससे पत्नी का संबंध होते ही कीर्ति या यशस्विता नष्ट होकर जीवन का ढाचा ही बदल जाता है। संशोधक की हैसियत से सारे जगत में कीर्ति होनी थी किंतु अब अपनी गली से बाहर कोई नहीं जानता। अपने संसार में भाग्योदय होते रहता है। व्ययस्थान में शनि शुक्र हों तो पति पत्नी में दिन भर झगडे होते हैं, शाम को बंद हो जाते हैं। अब थोडा आगे का भविष्य कहते हैं। ता. २७–२–४२ तक रवि पर से और लग्न में से शनि का भ्रमण हो रहा है। इस काल में आम तौर पर आर्थिक, शारीरिक और मानसिक तकलीफ़ होगी। हाथ में लिए हुए कार्यों पर रुकावटें या सहव्यवसायी लोगों का विरोध होगा। पत्नी के कार्य में प्रगति होगी किंतु चाहिए वैसी नहीं। १९४२ में संतति योग है। अपनी कुंडली में शनि राहु और गुरु के भ्रमण से फल बताते हैं। उसी प्रकार बेटे की कुंडली में ग्रहों के भ्रमण से फल देखा जाता है किंतु स्थानों की गिनती रवि से करनी पडती है। उदाहरण के लिए रवि से सातवें स्थान में शनि का भ्रमण हो रहा है तो पिता को कर्ज होगा, दिवाला निकलेगा, धंधा ठप हो जायगा। शायद मा की मृत्यु होगी या एखादा भाई या बहन की मृत्यू होगी। रवि के पंचम से गुरु जा रहा हो तो संतति योग होता है।

---

## निवेदन

अब तक मैंने प्राचीन और अर्वाचीन ग्रंथकारों के मत से रवि के फल और उस पर मेरे विचार देकर मेरा अनुभव भी लिख दिया है। सिर्फ अकेले रवि से फल पूरे बराबर बताना ठीक नहीं है क्योंकि रवि के साथ शुक्र और बुध हमेशा रहते हैं। इसलिए उनके भी फल उसमें मिले होते हैं। कई बार और दूसरे ग्रह भी रवि के साथ होते हैं इसलिए सिर्फ रवि पर बल नहीं देना चाहिये। देश, काल, कुल, जाति इत्यादि ध्यान में रखते हुए निर्देश करना उचित है।।

समाप्त

प्रकाशक—
अशोक दिगंबर घुमाळ,
नागपुर प्रकाशन, सीतावर्डी, नागपुर १

मुद्रक—
ल. म. पटले,
रामेश्वर प्रिंटिंग प्रेस, सीतावर्डी, नागपुर

# सर्वोत्कृष्ट ज्योतिष-ग्रंथ

## कै. ज्यो. ह. ने. काटवे

| | | | | | रु. आ. |
|---|---|---|---|---|---|
| (१) | रवि-विचार | मराठी | दुसरी | आवृत्ति | २-० |
| (२) | चंद्र-विचार | ,, | ... | ... | २-० |
| (३) | मंगळ-विचार | ,, | ... | ... | २-८ |
| (४) | बुध-विचार | ,, | ... | ... | २-० |
| (५) | गुरु-विचार | ,, | ... | ... | २-८ |
| (६) | शुक्र-विचार | ,, | ... | ... | २-८ |
| (७) | शनि-विचार | ,, | ... | ... | २-८ |
| (८) | भाव-विचार | ,, | ... | ... | २-० |
| (९) | गोचर-विचार | ,, | ... | ... | २-० |
| (१०) | शुभाशुभ ग्रहनिर्णय-विचार | ,, | ... | ... | २-० |
| (११) | भावेश-विचार | ,, | ... | ... | २-८ |
| (१२) | ग्रहण-विचार | ,, | ... | ... | ३-८ |
| (१३) | योग-विचार भाग १ ला | ,, | ... | ... | १-० |
| (१४) | योग-विचार भाग २ रा | , | ... | ... | २-० |
| (१५) | योग-विचार भाग ३ रा | ,, | ... | ... | २-० |
| (१६) | योग-विचार भाग ४ था | ,, | ... | ... | १-० |
| (१७) | योग-विचार भाग ५ वा | ,, | ... | ... | १-८ |
| (१८) | योग-विचार भाग ६ वा | ,, | ... | ... | २-० |
| (१९) | योग-विचार भाग ७ वा | ,, | ... | ... | २-० |
| (२०) | अध्यात्म ज्योतिष विचार | हिंदी | प्रथमावृत्ति | ... | १०-० |
| (२१) | रवि-विचार | ,, | ,, | ... | २-० |

नागपूर प्रकाशन – नागपूर नं. १